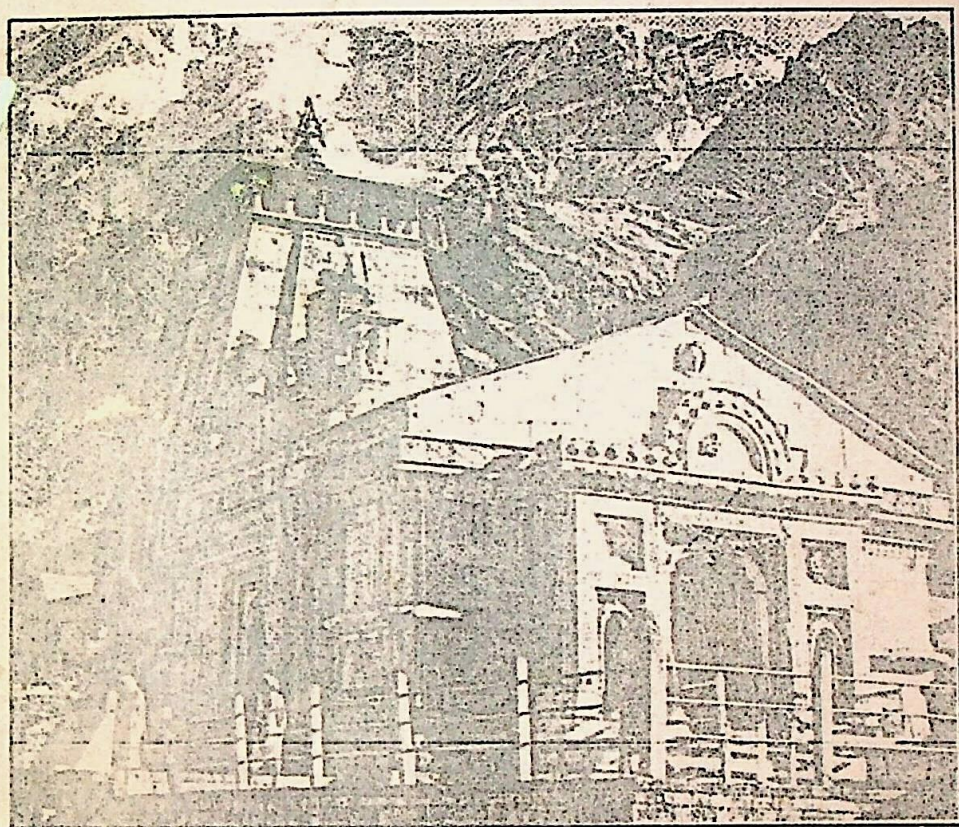


श्री केदारनाथस्तोत्राम्



आचार्य श्रीधर प्रसाद बलूनी

सी-259, गली संख्या 12, भजनपुरा, दिल्ली-110053 दूरभाष : 22567674



श्री केदारनाथ, हिमालय



श्री श्री १००८ स्वामी परमज्ञानानन्द पुरी जी महाराज

श्रीः

श्री, रघुनाथ बलूनी
३६४७७६३

श्रीकेदारनाथस्तोत्रम्

रचयिता

आचार्य श्रीधर प्रसाद बलूनी

प्रकाशकः

शिव मन्दिर समिति

अद्वैत-स्वरूप-सन्यास-आश्रम श्रीपरमधाम

म/१-४, शास्त्री नगर, दिल्ली-११००५२, दूरभाष : ३६४७७६३

श्रीकेदारनाथस्तोत्रम्

©: आचार्य श्रीधर प्रसाद बलूनी

सी- १२/२५६, भजनपुरा दिल्ली - ११००५३

दूरभाष - २५६७६७४

नवम्बर, २००२

मूल्य: २१ रु

वितरक :

प्रकाशक: शिव मन्दिर समिति

अद्वैत स्वरूप सन्यास आश्रम श्री परमधाम

एम/१-४, शास्त्री नगर, दिल्ली-११००५२, दूरभाष : ३६४७७६३

मुद्रक :

शब्द सज्जा : दिनेश चन्द्र वड्ढवाल

सी-२७४, भजनपुरा दिल्ली-५३, दूरभाष: २१७०७०२

❀ जय सच्चिदानन्द ❀

श्रीमत् परमहंस, परिव्राजकाचार्य, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ,

परमपुरीपीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित

श्री स्वामी केशवानन्द पुरी जी महाराज महामण्डलेश्वर (निरंजनी)

(अध्यक्ष :- शिव मन्दिर समिति)

श्री अद्वैत-स्वरूप-सन्यास-आश्रम 'परमधाम'

एम/१-४, शास्त्री नगर, दिल्ली-११००५२, दूरभाष : ३६४७७६३

सन्देश

भारत वर्ष में समय समय पर अनेक प्रतिभाओं का जन्म होता है। यहाँ उन प्रतिभाओं के द्वारा यदि श्री भगवान की स्तुति होती है तो उनका स्वयं का जीवन भी कृतकृत्य होता है और अन्यो के जीवन का उद्धार भी प्रशस्त होता है।

इसी संदर्भ में कविरत्न आचार्य श्रीधर प्रसाद बलूनी जी के श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् तथा पूजन विधि की रचना को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ। इनकी प्रतिभा का सदुपयोग भगवान के चरणों की स्तुति में हो रहा है यह देखकर प्रसन्नता हो रही है।

आशा है कि सनातनधर्मावलम्बी भक्तजन केदारनाथजी के स्त्रोत पाठ करने से पुण्य लाभ अर्जित करेंगे। इसी के साथ स्तोत्र के रचयिता बलूनी जी के प्रति हमारी मंगल कामना है।

१०/११/२००२

स्वामी केशवानन्द पुरी
शिवमन्दिर, शास्त्री नगर, दिल्ली

शुभ-कामना

जीवन में भोग-विलास, राज-पद, धन-वैभव, बहुतों को मिल सकता है। किन्तु लेखनी-वाणी, शब्द-ज्ञान, भाव-भक्ति के गुण प्रत्येक व्यक्ति को नहीं मिल सकते हैं, जो परमात्मा का अपना प्रिय होता है, सरस्वती का वरदपुत्र होता है, वही व्यक्ति कलम का धनी हो सकता है, वही साधक मनीषी बन सकता है। “कविः मनीषी परिभू-स्वयंभूः” होता है। वह काव्यसृष्टि का ब्रह्मा होता है, साहित्य जगत का सृष्टा होता है। कवि की सूक्ष्म दृष्टि होती है। जहाँ न जावे रवि वहाँ जावे कवि। लाख प्रयास करने पर भी कोई स्वयं कवि नहीं बन सकता। जिस पर भगवान की विशेष कृपा होती है वही कवि बन सकता है।

विद्वत्प्रवर श्री श्रीधरप्रसाद बलूनी ने उस परमपिता परमात्मा को पहचान लिया है, वह प्रभु जो गगन में है, चमन में, गुलशन में, धरती के कण-कण में एवं हम सबके जीवन में है, वही प्रभु उत्तुङ्ग शैल शिखर में रहता है। उसी प्रभु का नाम केदारनाथ है। जागेश्वर, बागेश्वर, भूतेश्वर, नागेश्वर, चन्द्रशेखर, उसी शिव बाबा के अनेक नाम हैं। वहीं केदारनाथ है। वही देवों के देव महादेव हैं, उसी का समस्त विश्व में आप-ताप-प्रताप है। जिसने उस प्रभु को पा लिया उसका जीवन गंगा की भाँति पावन पवित्र एवं सूर्य, चाँद, सितारों की भाँति देदीप्यमान हो गया है।

कुछ लोग स्वयं पर, परिवार पर अधिक लिखते हैं, कुछ लोग राजनेताओं का गुणगान गाते हैं तो कुछ लोग छैल-छबीली, रंग-रंगीली, गजगामिनी, मृगनयनी के रूप रंग पर अपनी लेखनी को निछावर कर देते हैं। लेकिन-जगन्नियन्ता, जगत्पिता पर तो कुछ भाग्यशाली लोग ही लिख सकते हैं। धन्य हो, श्री श्रीधर बलूनी जी, आप धन्य हैं। आपने भगवान केदारनाथ को कविता में ढालकर संस्कृत एवं हिन्दी में उनका गुणगान किया है। आपको मैं बधाई देता हूँ।

कविवर श्री श्रीधर बलूनी जी जीवन पर्यन्त हजारों-लाखों शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करते रहे हैं और अब अध्यात्म जगत में पहुँचकर उस परमपिता परमात्मा का गुणगान करते हैं। भगवान केदारनाथ का ऐतिहासिक महत्व कुछ भी हो किन्तु उनका भावात्मक, अध्यात्मिक महत्व अधिक है। भगवान केदारनाथ आज करोड़ों देशवासियों के केन्द्र बिन्दु हैं। विद्वान श्री श्रीधर जी ने संस्कृत एवं हिन्दी कविता में उनका गुणगान किया है। लेखक बलूनी जी प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कविवर बलूनी जी की यह रचना उत्तरोत्तर जन समाज एवं पाठकों के लिये अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध होगी एवं पाठकगण भगवान केदारनाथ के संस्कृत-हिन्दी गीतों को स्वर-लय में गाकर भगवान के चरणों में लवलीन होकर, भगवान की स्मृति में अपना जीवन समर्पित करेंगे। पुनः लेखक बलूनी जी को बधाई देता हूँ एवं उनके भावी जीवन के प्रति शुभ-कामना प्रगट करता हूँ।



आचार्य राजेन्द्र प्रसाद शर्मा विद्यावाचस्पति,

संस्थापक -

अभिनव भारती विद्यालय,

ई-२८१, सुभाष विहार, सोनिया विहार

सदस्य--धर्मसंघविद्वत्परिषद्, दिल्ली

पूर्व पाचार्य - श्रीमहावीरविश्वविद्यापीठ

पश्चिम विहार, नई दिल्ली

दूरभाष : २२६६०७५

दिनांक : १०/११/२००२

भारत, के प्रसिद्ध ज्योतिर्लिङ्गों में से केदारक्षेत्र में केदारनाथ के नाम से एक ज्योतिर्लिङ्ग है 'हिमालये तु केदार' के अनुसार उत्तराञ्चल के हिमालय में महिमाशाली धाम है। दीपावली के बाद इसके पट बन्द हो जाते हैं। इस अवसर पर देव गन्धर्व सिद्धगणों द्वारा पूजा होती है और वैशाख अक्षय तृतीया को पट खुलते हैं। तब से नर पूजा होती है। पट बन्द के समय भी अखण्ड दीपक जलता रहता है व पट खुलने पर अखण्डज्योतियों के दर्शन के लिये अपार श्रद्धालुओं की भीड़ होती है।

भगवान् शिव की पूजा दो रूपों में वर्णित है। एक तो लिङ्गपूजा और दूसरी शरीरपूजा। श्री शिवमहापुराण में विद्येश्वरसंहिता के पांचवें अध्याय में नन्दिकेश्वर ने कहा—

शृणु वत्स भवत्प्रीत्या वक्ष्यामि परामार्थतः। पुराकल्पे महाकाले प्रयत्ने लोक विश्रुते।।

आयुद्धयतां महात्मानौ ब्रह्मविष्णू परस्परम्। तयोर्मानं निराकर्तुं तन्मध्ये परमेश्वरः।।

निष्कलस्तम्भरूपेण स्वरूपं समदर्शयत्। ततश्च लिङ्गचिह्नत्वात्स्तम्भतो निष्कलः शिवः।।

स्वलिङ्गं दर्शयामास जगतां हितकाम्यया। तदा प्रभृति लोकेषु निष्कलं लिङ्गमेश्वरम्।।

सकलं च तथा वेरं शिवस्यैव प्रकल्पितम्।.....।।

भगवान् शिव के दो रूप शास्त्रों में वर्णित हैं एक निष्कल और दूसरा सकल। निर्गुण कला रहित होने के कारण निष्कल रूप में लिङ्ग प्रसिद्ध हुआ। जो निराकार और ब्रह्मस्वरूप है। सकल—शरीर पूजा के रूप में प्रसिद्ध है। सभी देवताओं की शरीर पूजा ही होती है। इसी को शिवपुराण में वेर पूजा शब्द कहा गया है। सभी देवताओं की पूजा शरीर रूप में होती है, किन्तु शिव पूजा लिङ्ग और मूर्ति (शरीर) रूप में होती है। शिव लिङ्गरूप में निर्गुण निराकार है और मूर्ति रूप में सगुण साकार हैं।

शिवपुराण की एक कथा है—एक समय ब्रह्मा और विष्णु में प्रलयकालीन युद्ध हुआ। महेश्वर और वैष्णव अस्त्र का एक दूसरे को समाप्त करने के लिए प्रयोग हो ही रहा था कि भगवान् शङ्कर दोनों के मध्य में अग्नि स्तम्भ के रूप में प्रगट हुये। और दोनों के अस्त्र उसमें भस्म हो गये। तब दोनों आश्चर्य में पड़ गये कि यह क्या है। दोनों ने इस स्तम्भरूप का आदि अन्त का पता लगाने का निश्चय किया तो विष्णु नीचे की ओर गये और ब्रह्मा ऊपर की ओर गये। परन्तु कुछ पता नहीं चला तो वापस लौट गये। उन

दोनों की दशा को देखकर भगवान् हँस पड़े। तभी ब्रह्मा जी ने केतकी पुष्प को देखा और कहा कि तुम मेरी साक्षी देना कि ब्रह्मा जी ने शिखर का अन्तिम भाग देख लिया है, वहां से लौटकर आये हैं। विष्णु और ब्रह्मा को आया हुआ देखकर शिव ने प्रगट होकर पूछा, तो विष्णु ने कहा कि मुझे मूल भाग का पता नहीं मिला। किन्तु ब्रह्माजी ने केतकी को साक्षी कर के कहा कि मैंने ऊपर का अन्तिम भाग प्राप्त कर लिया है, इस पर शिव कुपित हो गये उनकी भृकुटि से भैरव उत्पन्न हुए और ब्रह्मा का एक सिर काट डाला, जिसने मिथ्या उच्चारण किया था। अब ब्रह्मा के चार सिर शेष रह गये। तत्पश्चात् विष्णु ने शिव से प्रार्थना की पुनः शिव ने भैरव को अग्रिम सिर काटने से रोक दिया। और कहा कि मिथ्यावादी ब्रह्मा का कोई पुजन या उत्सव पुष्कर को छोड़कर अन्यत्र नहीं होगी। और विष्णु से कहा कि मेरे समान ही तुम्हारे भी पूजन, उत्सव होता रहेगा। और केतकी के पुष्प को शिवजी ने अपने पूजन से वर्जित कर दिया। इसलिये पूर्ण ब्रह्मरूप में लिङ्ग की पूजा होती है और सगुण साकार भक्तों को दर्शन देने योग्य रूप में मूर्ति पूजा होती है। अतएव पुष्पदन्ताचार्य जी ने भी शिवजी की स्तुति की है—

तवैश्वर्यं यस्माद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिर्धः,

परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।

ततो भक्तिभ्रद्भामरगुरुगुणदम्यां गिरिश यत्,

स्वयं तस्थे ताम्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥

इन्हीं केदारेश्वर भगवान् के दर्शनों को अनादि काल से लोग जाते रहे हैं। यहां गन्धमादन क्षेत्र शिवपार्वती का सगुण साकार विहरण क्षेत्र दर्शनदायी कहा जाता है। और लिङ्गरूप पूजन व आशीर्वाददायी माना जाता है। केदारनाथ के दर्शनों से ही पाण्डवों की गोत्र हत्या भी दूर हुई थी।

समय के प्रवाह से लुप्त प्रायः देवस्थलों का शिवजी के अवतार साक्षात् आदि जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी ने अन्वेषण किया। जिनके दर्शनों से भक्त समाज आज भी निष्पाप होकर कृतकृत्य अनुभव करता है।

आचार्य श्री श्रीधरप्रसादबलूनी जी ने इस दिव्यज्योतिर्लिङ्ग केदारनाथ के विषय में प्रसादगुणविशिष्ट मधुरभाषा में अपने हृदय के उद्गार व्यक्त किये हैं। इस कृति के आमूल चूड़ अवलोकन के पश्चात् प्रतीत होता है कि साम्बसदाशिव का प्रच्छन्न कथानक एवं महिमावर्णन के ब्याज से शिव विग्रह को जनमानस पटल पर रेखाङ्कित करने का सफल प्रयास किया गया है। इस रचना के माध्यम से समस्त भक्तवृन्द अवश्य उपकृत होंगे। इसके प्रचार प्रसार के लिये भगवान् केदारनाथ से प्रार्थना करता हूं तथा लेखक के प्रति शुभकामना व्यक्त करता हूं।

आचार्य राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

श्रीशिवभक्ति में केदारनाथ का स्वरूप

सदाशिवसमारम्भां, शङ्कराचार्यमध्यमाम्। अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्।

महाभारत ग्रन्थ की महत्ता को बताने वाला वाक्य "यन्न भारते तन्न भारते" जिसका वर्णन इस ग्रन्थ में नहीं हुआ है ऐसा भारत में कुछ भी ज्ञान शेष नहीं है। अतः पावन चरित्रों के स्मरण में यही सूक्ति हृदयग्राहिणी लगती है। महाभारत के उद्योग पर्व में गुरुदक्षिणा के लिए पर्यटन करते हुए गालव ऋषि को गरुड उत्तरदिशा में लेगये। गरुड ने यहां का परिचय देते हुए कहा कि यह हिमालयस्थ बदरिकाश्रम क्षेत्र आगया है-

अत्र नारायणो कृष्णो जिष्णुश्चैव नरोत्तमः। वदर्यामाश्रमपदे तथा ब्रह्मा च शाश्वतः॥११११/४॥

अत्र वै हिमवत्पृष्ठे नित्यमारते महेश्वरः। प्रकृत्या पुरुषः सार्धं युगान्ताग्निसमप्रभः॥११११/५॥

न स दृश्यो मुनिगणैस्तथा देवैः सवासवैः। गन्धर्वयक्षसिद्धैर्वा नरनारायणादृते॥११११/६॥

अत्र जिष्णुः सहस्राक्षः सहस्रचरणोऽव्ययः। सहस्रशिरसः श्रीमान् एक पश्यति मायया॥११११/७॥

अत्र राज्येन विप्राणां चन्द्रमा चाभिषिच्यतः। अत्र गङ्गा महादेवः पतन्ती गगनच्युताम्॥११११/८॥

प्रतिगृह्य ददौ लोके मानुषे ब्रह्मवित्तमः। अत्र देव्या तप स्तप्तं महेश्वर परीक्षया॥११११/९॥

अत्र कामश्च रोषश्च शैलश्चोमा च संबभूवुः। अत्र राक्षस यक्षाणां गन्धर्वाणां च गालवः॥११११/१०॥

आधिपत्येन कैलासे धनदोऽप्यभिषेचितः। अत्र चैत्ररथं रम्यमत्र वैशानसाश्रमः॥११११/११॥

अत्र मन्दाकिनी चैव मन्दरश्च द्विजर्षभः। अत्र सौगन्धिक वनं नैर्ऋतैरभि रक्ष्यते॥११११/१२॥

इस उत्तर दिशा में बदरिकाश्रम तीर्थ है जहां सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीनारायण विजयशील नर श्रेष्ठ और सनातन ब्रह्माजी निवास करते हैं। यहां ही हिमालय पीठ में प्रलयकालीन अग्नि के समान तेजस्वी अन्तर्यामी श्री भगवान् महेश्वर भगवती उमा के साथ नित्य निवास करते हैं। वे भगवान् नर और नारायण को छोड़कर अन्य किसी की दृष्टि में नहीं आते हैं। समस्त मुनिगण, गन्धर्व, यक्ष, सिद्ध अथवा देवताओं सहित इन्द्र भी उनका दर्शन नहीं कर पाते हैं।

यहां सहस्रों नेत्रों, सहस्रों चरणों और सहस्रों मस्तकों वाले एकमात्र अविनाशी श्रीमान् भगवान् विष्णु ही उन माया विशिष्ट महेश्वर का साक्षात्कार करते हैं। उत्तर दिशा में ही चन्द्रमा का द्विजराज के पद पर अभिषेक हुआ है। यहां आकाश से गिरती हुई गंगा को महादेव ने अपने जटाजूट पर धारण किया और उन्हें मनुष्य लोक में छोड़ दिया। यहीं पार्वती ने महेश्वर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी, ने इसी दिशा में महादेव जी को मोहित करने के लिए कामदेव प्रकट हुआ। उस पर शंकर का क्रोध दहनकारी हो गया। हिमालय और उमा यहां विद्यमान हैं। हे गालव यहां कैलाश पर्वत पर राक्षस यक्ष और गन्धर्वों का आधिपत्य करने के लिए धनाध्यक्ष कुबेर का अभिषेक हुआ था। यहीं उत्तर में चैत्ररथ नामक उद्यान है वैखानस ऋषियों के आश्रम हैं। हे ब्राह्मण पुत्र गालव

यहीं से मन्दाकिनी नदी मन्दराचल पर्वत से बह रही है। इसी दिशा में राक्षस गण सौगन्धिक बन की रक्षा करते हैं।

महाभारत की यह कथा केदारनाथ शिव शंकर के दिव्य स्वरूप व आकृति का परिचय देती है। दिव्य अवतार नर और नारायण उन्हें प्रत्यक्ष मिलते हैं। शेष लोगों के मनोरथों को सिद्ध करने के लिये केदारनाथ विभिन्न स्थानों पर स्वयं प्रकट हो गये। स्वयं प्रकट होने से केदारनाथ शिव ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजे जाते हैं।

यथा सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैलेमल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥

परल्यां वैद्यनाथं डाकिन्यांभीमशङ्करम्। सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुका वने॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे। हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥

द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत्॥

शिवपुराण कोटि रुद्रसंहिता अध्याय १२ श्लोक २१-२४

शिवपुराण के इस पावन प्रसङ्ग में केदारनाथ की महिमा के सम्यन्ध में कहा गया है कि अनादि काल में महादेव शिव प्रयलङ्कारी संहारक शक्ति के रूप में साकार कैलास में वास करते थे। विष्णु के अवतार धारी नारायण और नर प्रजापति धर्म के पुत्र मातामूर्ति के गर्भ से अवतीर्ण हुए और तपोवृत्ति से बदरीवन में ध्यानरत हो गये। यहां पर उन्हें ब्रह्मपुत्र सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार का सस्संज्ञ प्राप्त हुआ। नारद ने भक्ति पूर्वक आराधना का भार उठाया। नारायण ने सावित्री सिद्ध कर ली। ब्रह्म गायत्री विद्या उन्हें प्राप्त हुई। साथ ही तामसी वृत्ति के जीव दैत्य, दानव, पिशाच, भूत-प्रेत उनके तप में विघ्न करने को आते थे। शरीरधारी उपाधि के कारण नारायण विनाशक प्रवृत्तियों पर अनुशासन करने के लिए शिवाराधन में लगे। शिवपुराण की कोटिरुद्र संहिता में कहा गया है-

नर-नारायणाख्यौ याववतारौ हरेर्द्विज! ते पाते भारते खण्डे बदर्याश्रम एव हि॥२०.१॥

ताभ्यां सम्प्रार्थितः शम्भुः पार्थिवे पूजनाय वै। आयाति नित्यं तल्लिङ्गे भक्ताधीनतया शिवः॥२०.२॥

एवं पूजयतः शम्भुंस्तयो विष्ण्वतारयोः। चिरकालो व्यतीयाय शैवयोर्धर्मपुत्रयोः॥२०.३॥

यदि प्रसन्नो देवेशो यदि देयो वरस्त्वया। स्थायतां स्वेन रूपेण पूजार्थं शङ्कर! त्वया॥२०.६॥

इत्युक्तस्तु तदा ताभ्यां केदारे हिमसंश्रये। स्वयं च शङ्कर स्तरथौ ज्योतीरूपो महेश्वरः॥२०.७॥

ताभ्यां च पूजितश्चैव सर्वदुःखभयापहः। लोकानामुपकारार्थं भक्तानां दर्शनाय वै॥२०.८॥

स्वयं स्थितः तदा शम्भुः केदारेश्वर संज्ञकः। भक्ताभीष्टप्रदो नित्यं दर्शनादर्चनादपि॥२०.९॥

भगवान् के अवतार नर और नारायण ने भारत के उत्तरखण्ड (उत्तराञ्चल) में बदरी आश्रम में तपस्या की। उनके पार्थिव पूजन के शिव लिंग में महेश्वर स्वयं आया करते थे। इस तरह धर्म पुत्र नरनारायण के पूजन में बहुत समय निकल गया। एक बार महादेव से

नारायण ने वर मांगा है प्रभु अगर आप प्रसन्न हैं तो यहीं केंदार में रथाई रूप से निवास करें उनकी प्रार्थना से प्रभावित महादेव स्वयमेव ज्योर्तिलिङ्ग के रूप में प्रकट होगये। अब नरनारायण के पूजन में सरलता आ गई। सभी का दुःख भय दूर हो गया। सभी लोकों पर उन्होंने उपकार किया भक्तों को दर्शन सुलभ हो गये। भक्तों के अभीष्ट को सम्पन्न करते हुए, दर्शन और अर्चना से वरदानी शंभु केंदारनाथ कहे जाने लगे। उनका बढ़ता महात्म पंच केंदार से भी अधिक व्यापक और रमणीय हो गया।

यहीं से केंदारनाथ की यात्रा प्रारंभ हो गई। विकट पर्वतीय मार्ग पार करते हुए हरिद्वार से लोग केंदारधाम पहुंचने लगे। पुराण प्राप्त तथ्यों के अनुसार गौत्रहत्या के परिशोधन के लिए पाण्डवों ने भी हिमालय क्षेत्र में केंदारनाथ की यात्रा एवं दर्शन किये थे। इसी श्रुतिपरम्परा के पालन में निरन्तर यात्रा चल रही है। इस यात्रा में कुछ लोगों की मृत्यु भी हो जाती थी तो लोग इसे भी शिवलोक की प्राप्ति ही मानते थे। अतः उनका विश्वास था- केंदारेश्वरभक्ता ये मार्गस्थस्तस्य वै मृताः। तेऽपि मुक्ता भवन्त्येव नात्र कार्याविचारणा।।२२।।

शिवपुराण कोटिरुद्रसंहिता अध्याय २० से १-३, ६-६, २०।।

इस प्रकार केंदारनाथ महादेव की कृपा होती रही। लोग बड़ी श्रद्धा से केंदारनाथ का जल अथवा मन्दाकिनी या गंगा का जल भर करके सावन में शिव का स्नान कराने के लिए ले जाते रहे। आज भी कांवड़ी भक्त भोले का भजन करते हुये शिव भक्ति के रूप में गंगा जल को रामेश्वर तक या यत्र तत्र सर्वत्र मन्दिरों में अभिषेक के लिए ले जाते हुए देखे जाते हैं। ऐसे अवदरदानी आशुतोष शिव, ये केंदारनाथ महादेव सर्वत्र लिङ्गरूप में रम गये। शिवभक्तों ने मरने के बाद भी अपने पितरों को शिवसायुज्य प्रदान करने के लिए 'पितरो का भी लिङ्गवास' करना प्रारंभ कर दिया। सभी पितर पूजा पाकर के वरदानी बन गये। कुछ सम्पन्न लोगों ने अपनी सम्पत्ति को शिव मन्दिरों के निर्माण में लगा दिया आपूर्त धर्म के रूप में शिवभक्तों को विश्राम देने हेतु अनेकों रचनात्मक कार्य, निर्माण आदि किये गये। सन्तान का सुख वैभव वृद्धि, त्रिविध तापों का विनाश, उन्हें शिवपूजन से प्राप्त होता गया।

भगवान् केंदारनाथ शिव का यह पूजन सर्वत्र ऋद्धि सिद्धि देने वाला, अनिष्ट निवारक, अल्प मृत्यु से रक्षा करने वाला हुआ। कुछ लोग तो सुखपूर्वक शिव में ध्यान लगाकर प्राणत्याग करना अभीष्ट मानते हैं। अतः मृत्युकाल उपस्थित होने पर घर में ब्राह्मणों से मृत्युञ्जय जप करवाते हैं, ताकि प्राणों का विसर्जन शिव के मति के अनुसार गति देने वाला होवे। शिवालयों में भजन पूजन कराते हैं, दान पुण्य करते हैं। सब से अधिक स्तोत्र शिव के ही मिलते हैं। इस दृष्टि से वे शिव लीन होते हैं।

भगवान् भोलेनाथ केंदारेश्वर के समस्त पार्षदगण भी सर्वत्र भक्तों की रक्षा में तत्पर मिलते हैं। गांव-गांव में भैरव नाथ बाबा सभी की रक्षा करते हैं। शिव पर आश्रित सिद्ध, नाथ, योगी अपने मंत्र बलों के सहारे समाज के दैविक, दैहिक बाधाओं, व्याधियों का उन्मूलन

करते हैं। प्राकृतिक आपदा, मेघों के उत्पात ईति भीति दूर करने के लिए भी मन्त्र तन्त्र साधना महेश के प्रभाव से ही सफल रहती है।

शिव जी के त्रिशूल, डमरु, घिमटा, नन्दी समाज की निष्ठा के परिचायक हैं। गोपेश्वर, उत्तरकाशी आदि में स्थापित त्रिशूल भक्ति की भव्यता दर्शाते हैं। डमरु हिमालय में देवात्मा शिव, उनके गणों को आवेशित कर अभीष्ट उपाय बताने का साधन है। ढोल सागर शिव की नाद विद्या का प्रतीक है। प्राचीन काल की श्रुति है कि किसी भी संभावित आपदा की सूचना भैरव बाबा जोर से बोल कर जनता को दिया करते थे।

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग एक त्रिभुजाकार पर्वतशिखर के समान दिखाई देता है। बित्त्वकेदार में ऐसे ही शिला खण्ड हैं। जब इस शिलालिंग का शृंगार किया जाता है तो भव्य झांकी नयनान्द बढ़ाती हुई, हृदय प्रदेश में भव्य छवि विराजमान हो जाती है। इस मन्दिर में द्वार के दोनों ओर पार्वती लक्ष्मी जी की मूर्तियां बनी हैं। बाहर जगमोहनमिती पर चारों ओर पांचो पाण्डव, द्रोपती की मूर्तियां हैं। नन्दी महाराज की विशाल मुखाकृति शङ्कर के दर्शन की लालषी लगती हैं। सजग नन्दिकेश्वर रक्षा कर रहे हैं। मंदिर की परिक्रमा के पास महिमाशाली अमृतकुण्ड, ईशानकुण्ड, हंसकुण्ड, रेतसकुण्ड हैं। मन्दिर के उत्तर में पर्वत शिखर के मध्य वासुकी ताल है, जहां सूर्यकमल खिलते हैं। भृगुपंथ, श्रीगंगा, भैरवशिला आदि दर्शनीय स्थान हैं। प्रकृति का विराट सौन्दर्य इसे मण्डित कर रहा है। आद्य शङ्कराचार्य की निर्माण समाधि पर भव्यमूर्ति विजयस्तम्भ सी नमन योग्य है। यही उनका निर्वाण स्थान है।

वर्तमान में अक्षय्य तृतीया पर केदार नाथ के पट खुलते हैं और गोवर्धनपूजा पर पट बंद हो जाते हैं। सिद्धगण ही तब उनकी आराधना करते हैं, ऐसा माना जाता है। शीतकाल में उखीमठ में केदारनाथ की अर्चना, अभिषेक, शृंगार आरती होती है। पंचकेदारों की अर्चना भी मन्दिर-समिति के ही द्वारा संचालित रहती है। बित्त्वकेदार में केदारनाथ जैसा शैलखण्ड है। अन्यत्र नाना प्रकार के शिवलिंगों के रूप मिलते हैं। नकुलीश, मुखलिंग, चतुर्मुखलिंग, पंचमुखलिंग, नर्मदेश्वर आदि नाना प्रकार के बाणलिंग के रूप में शिव प्रतिष्ठित हैं। पर्वतीयप्रदेश में तो मुख्य स्थानों पर पेड़ों के नीचे त्रिशूल, लौहदीप, लौहनाग भी गढे मिलते हैं। प्रायः शिवमन्दिरों के कपाट खुले रहते हैं या खुले में दर्शन होते हैं। प्राचीन अवशेषों को देखने से पता चलता है कि किन्ही अज्ञात लोगों द्वारा ध्वस्त मन्दिर के बाद भी शंकर की पूजा के स्थान निर्जन बनते गये। उत्तरांचल में हजारों मन्दिर इसी प्रकार की शिवपूजा की प्रधानता को बताते हैं। जिन पर जल या घास, पत्तियां और फूल डालकर स्थानीय लोग अपनी श्रद्धा को व्यक्त करते हैं। केदारनाथ के गुणगान की परम्परा तथा कीर्तन भजन यहां के जीवन का संबल है।

पार्वतीश-शंकर, हरगौरीमन्दिर, शिवालय सभी सिद्धयोगियों के आश्रयस्थल लोकमंगल में रत हैं। इनके आधार पर अनेकों विद्यालय चल रहे हैं, धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों, जपों का कार्य आशुतोष केदारनाथ की अनुकम्पा को बरसा रहा है। नित्यकर्म परायण श्रद्धालु जनों के आराध्य शंकर की पूजा में समस्त सत्कर्म समाहित हो जाते हैं।

में उन सभी व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनके सानिध्य से यह रचना सामने आई है।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

श्रीधरप्रसादबलूनी

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिः पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥



गं गणपतये नमः

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।

निराकारान्तराकार—रूपाय परमात्मने ।

नमः केदारनाथाय, पार्वतीपतये नमः ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,

श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,

जय जय करुणाब्धेः श्रीमहादेव शम्भो! ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचरा प्राणाः शरीरं गृहं,

पूजा तैः विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः ।

सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरः,

यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं, शम्भो तवाराधनम् ॥

ध्यायेत् केदारनाथं हिमगिरिशिखरे ज्योतिषा लिङ्गरूपं,

भान्तं नारायणस्य व्रतजपनियमैः संस्थितं नित्यबोधम् ।

वीणावेणुमृदङ्गैः स्तुतिनिनदभरैः नृत्यगीतैः प्रसन्नं,

विघ्नानां कालदण्डं प्रकटितविभवं शूलपाणिं महेशम् ॥

महिम्नो महेशस्य पारं न याति,
स्वयं शारदा सा श्रुतीनां विधात्री ।
तथापि प्रयाति प्रवक्तुं मतिस्तं,
महादैवतं नौमि केदारनाथम् ॥ १ ॥

तुषाराद्रिशृङ्गाणि शुभ्राणि हैमीं,
चतुष्कम्भकेदारशोभां सृजन्ति ।
ततो याति मन्दाकिनी द्वारदेशात्,
पुनाति भुवं नौमि केदार नाथम् ॥ २ ॥

नरेणाऽथ नारायणेनात्मसिद्धौ,
पुराऽऽवाहितो देवकैलाशकान्तः ।
स्थिरोऽभूद्गिरौ ज्योतिषां लिङ्गरूपे,
तपोवैभवं नौमि केदारनाथम् ॥ ३ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महिमा महेश की कौन वर्णन कर सका सम्पूर्ण है,
जिसने बनाये वेद हैं, वह शारदा भी मौन हैं ।
तब भी प्रयास बना रहे गुणगान शंकर का करूँ,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१॥

ऊंची हिमालय चोटियां, जो हिम धवल हैं राजती,
जलधार उनसे बढ़ रही चौखम्भ शोभा साजती ।
मन्दाकिनी पावन बही, निर्मल करे जलधार है,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२॥

नर और नारायण तपस्वी साधना थे कर रहे,
निज विघ्न बाधा दूर हो कैलाशनाथ मना रहे ।
स्थिर शोभते तब से यहां पर ज्योतिलिङ्ग रमे हुए,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३॥

अहो केन दारोदयालुर्गिरीशो,
जटायाश्च मन्दाकिनीं यो मुमोच ।
जलं सोमयुक्तं जगत्पालसिद्धं,
महाकारुणं नौमि केदारनाथम् ॥ १४ ॥

शिवो निर्मलो निष्कलो नित्यबोधो,
जगत्सर्जते पाति लीनं करोति ।
स्वयं व्यक्तमव्यक्ततत्त्वैः समक्षं,
विभान्तं गिरौ नौमि केदारनाथम् ॥ १५ ॥

ऋषीणां महच्चिन्तनाधारभूतं,
मुनीनां तमोमोहहर्तारमीशम् ।
महायोगिभिश्चिन्त्यते ज्ञेयतत्त्वं,
प्रतिष्ठं गिरौ नौमि केदारनाथम् ॥ १६ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अब तो विधाता से द्रवित शंकर दया से भर गये,
अपनी जटा से सरस जल मन्दाकिनी लहरा दिये ।
करुणा भरी उनकी कृपा बढ़ती सदा जग पालने,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४॥

शिव नित्य निर्मल कलाहीन समग्र ज्ञान स्वरूप हैं,
करते जगत् निर्माण रक्षण, लीन भाव विशेष हैं ।
अव्यक्त तत्त्वों से स्वयं साकार गिरि में भा रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५॥

शिवरूप ऋषियों का सदा आधार चिन्तन का रहा,
अज्ञान मोह विनाशकारी मुनिमनों को भा रहा ।
योगी जनो के ध्येय तुम अक्षय्य हिमाद्रि बस गये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

यशस्वी तपस्वी मनस्वी मनीषी,
स्वसंस्कारवत्या गिरा त्वां स्तुवन्ति ।
लभन्ते ततो धैर्यसन्तोषशान्तिं,
सुनिर्वाणदं नौमि केदारनाथम् ॥ ७ ॥

शिवः सर्वव्यापी विहारी पृथिव्या—
मनिर्वाच्यरूपः स लिङ्गात्मकोऽस्ति ।
तदर्चारते ज्योतिरन्तःप्रविष्टं,
सुदीप्तिप्रदं नौमि केदारनाथम् ॥ ८ ॥

स्मृतो वीक्षितो वन्दितो भाषितो वा,
श्रुतो सम्पदां यच्छतीति प्रसिद्धम् ।
तमोमोहकालुष्यहारं नराणां,
प्रभादायकं नौमि केदारनाथम् ॥ ९ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

जितने तपस्वी या मनस्वी लोग यश को पा रहे,
संस्कार वाली भारती से सब मनीषी गा रहे ।
सन्तोष, धीरज, शान्ति से निवारण तुमसे चाहते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥७॥

जो याद करते, देखते, कहते, सुने, झुकते रहे,
उनको बड़ी दौलत मिलायी, ख्याति तेरी छा गई ।
सबका हटाया पाप दूषण, महामंगल दे दिया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥८॥

बैठे घिरे बेताल, प्रेतों, भूतगण समुदाय में,
सुन देखते हो नाच, गाना अप्सरा संगीत में ।
ये यक्ष किन्नर सिद्धगण गन्धर्व सह परिवार में,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥९॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

श्रितं किन्नरैर्यक्षगन्धर्वसिद्धैः,
समन्ताद्वृतो भूतबेतालप्रेतैः ।
शृणोत्यप्सरः नृत्यसंगीतवाद्यं,
सदारात्मजं नौमि केदारनाथम् ॥ १० ॥

समाराधनाय प्रयान्ति जनौघा,
महादेवमेनं च यात्रा-प्रसङ्गैः ।
स नारायेणेनाऽथ वा पूजितोऽभूत्,
सतां वन्दितं नौमि केदारनाथम् ॥ ११ ॥

तपोध्यानसत्कर्म होमार्चनानि,
श्रुतिज्ञानविद्याजपं कर्मकाण्डम् ।
गृहे द्रव्ययोगात् फलं यत् सुलभ्यं,
गिरौ दर्शनान्नौमि केदारनाथम् ॥ १२ ॥

ॐ नमः शिवाय
॥ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

शिव सर्वव्यापी भूमि पर करते विहार यथेष्ट हैं,
वर्णन न उनका हो सके, शिवलिङ्ग रूपी श्रेष्ठ हैं ।
जो अर्चना उनकी करे वरज्योति से मन बस गये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१०॥

आराधना शिव की करे सब लोग आते है यहां,
यात्री बड़े उल्लास से हिमप्रस्थ पर बढ़ते वहां ।
नारायणी पूजा रमे की वन्दना सज्जन करें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥११॥

तप ध्यान या सत्कर्म पूजन होम जो घर में करे,
सब वेद ज्ञान विधान धन के कर्मकाण्ड भरे रहे ।
फल प्राप्त होता है वही, जो दर्शनों से सुलभ है,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१२॥

प्रयागे पुरा सङ्गमे ज्ञानसत्रं,
समायोजितं तत्त्वजिज्ञासुभिर्यत् ।
परं ज्ञानतत्त्वं शिवं चिन्तयद्भिः—
महद्भिः श्रुतं नौमि केदारनाथम् ॥ १३ ॥

अहो सङ्गमे यामुनं गाङ्गवारि,
हरेर्वा हरस्याद्रितो नः प्रयाति ।
जले स्नानपाने धृतं येन तत्त्वं,
शिवं पुण्यदं नौमि केदारनाथम् ॥ १४ ॥

स सूतो महाभाग्ययोगात्तदानीं,
भ्रमन् तीर्थयात्राक्रमेण प्रयागे ।
वृतं मण्डपे वीक्ष्य रुद्राभिषेकं,
सहर्षोऽवदन्नौमि केदारनाथम् ॥ १५ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

आया जभी भी पर्व, संगम से प्रयाग भरा रहे,
जो तत्त्व चिन्तन रसिक हैं, वे ज्ञानसत्र किया करें ।
ऐसे समय कुछ ज्ञान चिन्तक शैव तत्त्व विचारते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ।। १३ ।।

यमुना तथा गङ्गा सलिल सङ्गम यहां करता हुआ,
हरि और हर के पर्वतों के गेह से बहता हुआ ।
सब पुण्यदायक तत्त्व से भर स्नान, पान करा रहा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ।। १४ ।।

ऐसे समय में सूत जैसे भाग्यशाली आ गये,
रमते हुए बहुतीर्थयात्रा से प्रयाग समा गये ।
होते हुए अभिषेक शिव का देखकर कहने लगे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ।। १५ ।।

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

परिज्ञाय सूतं पुराणाऽऽगमज्ञं,
महद्भिः प्रदत्तोऽर्घ्यमस्मै तदानीम् ।
कथाश्रावकैर्वन्दितो भूरिमानैः,
स पृष्टः शिवं नौमि केदारनाथम् ॥ १६ ॥

भवद्भाललग्नं त्रिपुण्ड्रं सुदीप्तं,
गले चाऽक्षमाला त्रिशूलं करस्थम् ।
शिवे तत्त्वविद्याविशिष्टे रतस्त्वं,
स्वतो भाषसे नौमि केदारनाथम् ॥ १७ ॥

भवान् तीर्थवित् प्राप्तबोधः स्वपित्रा,
गुरोर्गौरवं मानवानां तनोषि ।
गुरुं शङ्करं श्रोतुकामा इमे त्वां,
नमन्ते यथा नौमि केदारनाथम् ॥ १८ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

तब ब्रह्मज्ञानी भक्तजन, पहचान कर यह सूत हैं,
आगम पुराण सुना चुके, ये अर्घ्यपूजा योग्य हैं ।
वन्दन किया बहुमान से शिवतत्त्व के वे रसिक हैं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१६॥

है त्रिपुण्ड चमक रहा, यह भाल पर जो आपके,
माला गले रुद्राक्ष की, कर में त्रिशूल प्रताप का ।
शिवतत्त्व के सुन्दर प्रवक्ता! तत्त्वज्ञान सिखाइये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१७॥

हैं तीर्थज्ञानी आप अपने पिता से सीखे हुए,
गौरव गुरु का निज जनो को बांटते देखे गए ।
हम चाहते कल्याणकारी ज्ञान शिव का सुन सके,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥१८॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महद्भिः प्रतिष्ठापितो ज्ञानमन्त्रे,
जगादाशु पृष्टस्तदा शैवतत्त्वम् ।
गिरौ संस्थितोऽसौ जगद्व्यापको वै,
सुखं प्रीतिदं नौमि केदारनाथम् ॥ १६ ॥

गरीयान् कृत् प्रश्न एषोऽनुकूलः,
शिवाख्ये पुराणे यथा व्यास आह ।
नराकारमोङ्काररूपेण वेद्यं,
स्थितं स्वासने नौमि केदारनाथम् ॥ २० ॥

अनन्तैश्च लिङ्गैः सुनिवार्णरूपं,
शिवं रुद्रविश्वेश्वरं कोटिरुद्रम् ।
शिवाकाररूपं च कैलासनाथं,
रमन्तं गिरौ नौमि केदारनाथम् ॥ २१ ॥

उन ज्ञानियों से पीठ पर आसीन सूत कथा कहें,
जो शैवतत्त्व बखानते, संसार में वह गूढ है।
साकार जो हिमवान में सुखप्रेम जग में व्याप्त है,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १९ ॥

यह आपका अनुकूल सुन्दर प्रश्न सार कहा हुआ,
है व्यास का उतर विशद, जो शिव पुराण भरा हुआ।
ओंकार से साकार रूपी गिरिशिला पर राजते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । २० ॥

उनके अनेकों चिन्ह हैं निर्वाणदायक रूप के,
शिव रुद्र विश्वेश्वर कहें, या कोटिरुद्र स्वरूप के।
कैलाशपति गौरीश गिरि में रम रहे साकार हैं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । २१ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

जयत्याशुतोषश्चिदाकाशवासी
स गौरीपतिर्यो महादेवरूपः ।
यतो यामि पश्यामि रूपे विचित्रे,
सलीलं प्रभुं नौमि केदारनाथम् ॥ १२२ ॥

भवानीपतिं भावकोटिप्रकाशं,
स्फुरज्ज्योतिषा लिङ्गरूपेण भान्तम् ।
दयालुं जगद्व्यापकं सर्वलभ्यं,
सुखाराधितं नौमि केदारनाथम् ॥ १२३ ॥

चिदानन्दरुद्रा दयार्द्रा जनानां,
महैश्वर्यभैषज्यरूपे प्रतिष्ठाः ।
स्थितं शैवतत्त्वं निगूढं समक्षं,
प्रयत्नोद्धृतं नौमि केदारनाथम् ॥ १२४ ॥

चैतन्यरूपी आशुतोष जयकार तेरा हो रहा,
 गौरीपति विहरा करे, सब ओर मङ्गल छारहा ।
 सब ओर अपने देखते लीला किये नटवर रहें,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥२२॥

सबसे अलख गौरीपति हैं भावना से भासते,
 जायें जहां मिलते हमें, है लिङ्ग रूप प्रकाशते ।
 व्यापक सभी को प्राप्त हैं, आराधना से सुलभ हैं,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥२३॥

वे चेतना से रुद्र हैं, सब पर दयालु हो रहे,
 ऐश्वर्य की औषध बने, सब में प्रतिष्ठित हो रहे ।
 जिसने प्रयत्न किया उसी के प्रकट रूप समक्ष हैं,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥२४॥

शिवो कालशक्त्या च सायुज्यदाता,
तथैश्वर्यशक्त्या समृद्धिं प्रसूते ॥
करालात्मको सृष्टिसंहारलग्नः,
त्रिशक्त्यात्मकं नौमि केदारनाथम् ॥२५॥

स वै ध्यानयोगेन नारायणेन,
स्वरूपेण तादात्म्यकारे प्रदृष्टः ।
ततो लोकसद्भावरक्षाव्रतार्थे,
प्रतिष्ठापितं नौमि केदारनाथम् ॥२६॥

प्रभोः स्थापितं चेतनं ब्रह्मरूपं,
स्थिरं ज्योतिषां लिङ्गरूपं च दृश्यम् ।
शिवं योगिभिः सद्गुणं पूजयद्भिः,
प्रशान्तं श्रुतं नौमि केदारनाथम् ॥२७॥

वे कालशक्ति से सभी को पास अपने ला रहे,
ऐश्वर्यशक्ति से उन्हें सम्पन्नता भी दे रहे ।
हैं तीन शक्ति आपकी, संहार सर्जन कर रहीं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२५॥

ये शिव प्रकट साकार आये, ध्यान नारायण किए,
तपविघ्न उनके नाशकर केदार में जा बस गये ।
भगवान की ज्योति रमी, रक्षा नियम सद्भाव से,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२६॥

नारायणी पूजा रही चैतन्य शिव साकार की,
अब लोकहित में पूजते हैं, ज्योति लिंगाकार में ।
उन सद्गुणों को पूजते, योगी उन्हीं में रत सुने,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२७॥

नमो वामदेवाय रुद्राय तुभ्यं,
महाघोररूपाय शर्वाय नित्यम् ।
धियः प्रेरकं सर्वविद्याधिदेवं,
गुरुं धीमतां नौमि केदारनाथम् ॥२८॥

नरा भावसामर्थ्यवित्तप्रयोगै—
स्तमर्चन्ति गौरीगुरोगेहसंस्थम् ।
विषं येन पीतं न रत्नेषु लुब्धं,
वरानन्ददं नौमि केदारनाथम् ॥२९॥

प्रभाते समुत्थाय रुद्राभिषेकैः,
भृगुः शैवधर्मे स्वनिष्ठां बबन्ध ।
गुरुं नीतिशास्त्रे सुतं शुक्रमाप,
प्रसादीकृतं नौमि केदारनाथम् ॥३०॥

इन वामदेव को नमन है, हे रुद्र तेरी शरण हैं,
हे घोररूपी विघ्नभञ्जक, नमन से ही तरण है।
हो बुद्धिप्रेरक, ज्ञानप्रद, विद्यागुरु संसार के,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२८॥

सब लोग अपने भाव से, सामर्थ्य से संभार से,
केदार पर्वत पहुंच करके दिव्य पूजा कर रहे।
ये गरलपायी, रत्न में निर्लोभ वर देते रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥२९॥

भृगु ऋषि गये केदार में, नित नियम से अभिषेक कर,
शंकर मनाते, शैवनिष्ठा ध्यान में रत हो गये।
शिव से उन्हे सुत मिल गया था शुक्र, भार्गव वंश था,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३०॥

ऋषिर्याज्ञवल्क्यो हिमाद्रिं प्रयातः,
 शिवं रुद्रसूक्तैः प्रसन्नं चकार ।
 ततो योगधर्मस्य शिक्षां वितन्वन्,
 कृपां याचते नौमि केदारनाथम् ॥३१॥

समस्ताः सुरा दैत्यशक्त्या परास्ता,
 ययुः शङ्करं भीतगीतिं वदन्तः ।
 महाकालनष्टा मृता दानवास्ते,
 प्रहृष्टाः सुरा नौमि केदारनाथम् ॥३२॥

गतो द्वारवत्याः सुतार्थी स कृष्णः,
 तपस्यारतोऽभूच्च केदारनाथे ।
 सुतं शम्बरारिं वरेणाऽत्र लब्ध्वा,
 प्रभावात्मकं नौमि केदारनाथम् ॥३३॥

ऋषि याज्ञवल्क्य गये हिमालय, रुद्र सूक्त जपा करें,
पायी सफलता धर्म में, अब योगविद्या दे रहे ।
उनकी कृपा से जनक जैसे तत्वज्ञानी पुरुष थे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३१॥

जब भीड़ देवों पर पड़ी, दानव हराते जा रहे,
वे सब शरण शंकर गहे, निर्भय बने हर्षित रहे ।
दानव सभी हारे, मरे थे, काल नर्तन कर रहा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३२॥

अब कृष्ण की गाथा सुनो, केदार में तप को गये,
प्रद्युम्न जैसा सुत मिला, वे भक्त शिवके हो गये ।
उनका प्रभाव विचित्र था, अवतारधारी छा गये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३३॥

वने पाण्डवाः पीडिताः कौरवैस्ते,
जगामार्जुनः शस्त्रविद्यां ग्रहीतुम् ।
प्रसाद्य गिरीशं स्वलक्ष्ये प्रसन्नः,
शिवं वन्दते नौमि केदारनाथम् ॥३४॥

स पाराशरः सिद्धहस्तो लिखित्वा,
महाभारतं श्रीगणेशस्य योगात् ।
वरेणाऽऽशुतोषस्य निष्णातविद्यो,
नतो भाषते नौमि केदारनाथम् ॥३५॥

इहाराध्य रुद्रं स सावर्णिविप्रो,
महायोगविद्याप्रबन्धं चकार ।
सुखाराधनाद्दुर्लभं पूरयन्तं,
प्रसन्नाननं नौमि केदारनाथम् ॥३६॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

पाण्डव बड़े पीडित हुए, कौरव निकाले थे उन्हें,
तब शस्त्रविद्या सीखने, अर्जुन गये केदार थे ।
उनसे प्रसन्न महेश ने, सब शस्त्र पाठ सिखा दिया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३४॥

श्री व्यास ने पूरी सफलता से महाभारत लिखा,
उनका बड़ा सहयोग लेखन में गणेश रमा दिखा ।
केदारनाथ प्रसन्न थे, विद्या सफल की व्यास की,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३५॥

सावर्णि नामक विप्र ने शंकर प्रसन्न किये यहां,
सब योग विद्या ग्रन्थ लिखकर शिष्य सिखे थे वहां ।
आराधना का फल मिला, मुखचन्द्र शोभा छा रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३६॥

शुभे क्षेत्रमध्ये तथा हैमप्रस्थे,
धृतं पुण्यबीजं समृद्धिं प्रयाति ।
ततो ज्ञानवृद्धा हिमाद्रौ यजन्ति,
प्रबोधात्मकं नौमि केदारनाथम् ॥ ३७ ॥

सदाचारशौचं जपं भस्मलेपं,
तपोदानधर्मादिकं लोकसेवा ।
मितं प्रस्तुतं भूरि लाभं विधत्ते,
प्रभूतार्थदं नौमि केदारनाथम् ॥ ३८ ॥

भवद्भिधृतं त्र्यायुषं कश्यपस्य,
सुरैः जामदग्न्येन योगेन लब्धम् ।
ललाटे त्रिपुण्ड्रं व्यनक्ति प्रयत्नं,
सुयोगाश्रयं नौमि केदारनाथम् ॥ ३९ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

यह क्षेत्र शुभ है, हिमधवल जिसका प्रभाव महान है,
जो बीज बोया फला फूला, इसका सभी को ज्ञान है ।
इस तत्त्व के ज्ञाता सभी करते यजन तप हैं यहां,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३७॥

केदारनाथ पवित्र भूमि पर किया व्यवहार जो,
जप, दान, धर्म, पवित्र तप, यज्ञादि भूति विधान को ।
सीमित बहुत भी प्रेम से, सब लाभ भारी हो रहा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३८॥

शुभ यज्ञ रत यह भस्म जीवन शक्ति तिगुनी दे रही,
कश्यप तथा जमदग्नि की यह साधना फल पा रही ।
कहता ललाट त्रिपुण्ड्र है, शुभ कर्म में रत आप हैं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥३९॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

विधिं वो गृहीत्वा गृहे रुद्रयाजी,
शिवस्याभिषेकावृत्तिं यो विधत्ते ।
प्रयान्ति ग्रहा बालकानां सुशान्तिं,
शिशोरक्षकं नौमि केदारनाथम् ॥ ४० ॥

यदा चोपसर्गा भवन्ति प्रवृद्धा—
स्त्रिरावृत्तिपाठे शिवस्याभिषेके ।
क्षयाय प्रयान्ति, श्रियं वा लभन्ते,
विपत्त्यर्दकं नौमि केदारनाथम् ॥ ४१ ॥

ग्रहाणां महादोषशान्त्यै प्रयुक्ता,
शिवाराधना पञ्चवृत्त्याऽभिषेकः ।
भयं भ्रान्तिरोगान् समूलान्तु भङ्क्त्वा,
सुपुष्टिप्रदं नौमि केदारनाथम् ॥ ४२ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

आपकी विधि को समझ कर, यदि गृहस्थ चला करें,
वे एक वृत्ति पाठ से, अभिषेक शंकर का करें।
सब बालग्रह की शान्ति हो, रक्षक सदा शिवजी रहें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४०॥

जब बढ रही बाधा बहुत हो, हो रहा उत्पात हो,
शिव का करें अभिषेक, तीनों आवृत्ति का पाठ हो।
श्रीसम्पदा बढती रहे, शंकर विपद् दलते रहें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४१॥

ग्रह दोष भारी बढ रहे हैं, शांत चित न हो रहा,
तब पांच आवृत्ति पाठमय, अभिषेक पूजन भा रहा।
भय भान्ति रोग मिटें, बढे आरोग्य पुष्टि मिला करे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४२॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भयं वीक्ष्य शारीरिकं मृत्युजन्यं,
तदा सप्तवृत्या जपे रुद्रपूजा ।
बलं बुद्धिमारोग्यरक्षां विधत्ते,
बलानां विधिं नौमि केदारनाथम् ॥ ४३ ॥

यदा वाजपेयस्य यज्ञस्य वाञ्छा,
नवावृत्तिपाठाऽभिषेको विधेयः ।
स्थिराः सम्पदोऽनुग्रहस्तत्र जातो,
महाभूतिदं नौमि केदारनाथम् ॥ ४४ ॥

महैश्वर्यराज्याधिकारो जगत्यां,
तदैकादशवृत्तिपाठांश्च कुर्यात् ।
शिवं लक्षपद्मैस्तथा विल्वपत्रैः,
समासेचितं नौमि केदारनाथम् ॥ ४५ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भय मृत्यु का सा छा रहा, काया शिथिल होती चले,
तब सात आवृत्ति पाठ के, अभिषेक रुद्री का चले ।
बल बुद्धि स्वास्थ्य समृद्धि दायक, मन्त्र शक्ति प्रभाव दे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४३॥

जब बाजपेयी यज्ञ से सम्मान सुधरे कामना,
तब पाठ रुद्री का करें, अभिषेक नौ दिन भावना ।
दौलत रहे घर में भरी, शिव की कृपा बरसा करे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४४॥

ऐश्वर्य भारी राज का, अधिकार सुस्थिर पाइये,
प्रतिवर्ष ग्यारह पाठमय, अभिषेक श्रद्धा चाहिए ।
तब बेलपत्री लाख हों, अरविन्द पुष्प चढ़े रहें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४५॥

जगत्पातकानां विनाशोऽत्र दृष्टः,
महान्तो दिशन्ति तदेवास्ति तत्त्वम् ।
जपन् शङ्करं यामि तीर्थाऽटनार्थं,
भवच्छेदकं नौमि केदारनाथम् ॥ १४६ ॥

सुसम्भारपूजा महत्पुण्यदात्री,
सुखश्राविणी श्रूयते प्रार्थना सा ।
कृतं कीर्तनं सर्जते दिव्यभावं,
प्रभूत्यर्थदं नौमि केदारनाथम् ॥ १४७ ॥

शिवाभूमिरेषाऽभिषेकैः प्रवृद्धा,
महद्भिः स्वसंकल्पसिद्धिः कृताऽत्र ।
समाजे हिताय प्रदिष्टः सुयोगः,
सुयोगार्थदं नौमि केदारनाथम् ॥ १४८ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

यह रुद्र पूजा विविध पातक नाशकारी है कही,
सत्पुरुष योगी गुणीजन को आत्मतत्त्व बता रही ।
कीर्तन किया है दिव्य भावों से समृद्धि बढा रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४६॥

मैं तीर्थयात्रा में रमूँ, भवभीतिनाशक शिव जपूँ,
पूजन किया पुष्पांजलि माधुर्य मय गाता रमूँ ।
विधि ज्ञान सामग्री सकल से पुण्यदायी फल रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४७॥

यह भूमि मङ्गलदायिनी, अभिषेक से शोभित लगे,
सब सिद्ध साधक मग्न हैं, संकल्प पूर्ति से जगे ।
सारा समाज कृतार्थ है, शुभ योग का फल मिल गया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥४८॥

सुदूरागतैर्वीक्षिता रुद्रपूजा,
गृहे पार्थिवं पूजनं यैः प्रयुक्तम् ।
समुल्लासपूर्णा रमन्ते गृहेषु,
प्रमोदायतं नौमि केदारनाथम् ॥४६॥

प्रकृत्यादिबन्धैरसौ चाऽष्टमूर्ति-
र्महाभूतचन्द्रार्कयज्ञस्य कर्ता ।
स्वजीवाय लीलावपुः प्रस्तुवन्तं,
प्रभावाश्रितं नौमि केदारनाथम् ॥५०॥

स्वदेशं त्रिलोकं त्रिलोकी महेशः,
कणे दृश्यमानः क्षणे शङ्करोऽसौ ।
भजन्तो मनोदीप्यमानः प्रकाशैः,
निकामार्थदं नौमि केदारनाथम् ॥५१॥

आये सुदूर प्रदेश से, यह रुद्रपूजा भाल के,
मन में प्रमोद मना रहे, पार्थिव यजन को जान के ।
अपने घरों में हर्ष से मिलकर सभी पूजन करें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥४६॥

यह अष्टमूर्ति देव हैं, प्राकृत लखे यजमान से,
जो पाञ्चभौतिक तत्त्व वाले सूर्य चन्द्र समान से ।
सन्मुख प्रकट इस जीव को लीला शरीर दिखा दिया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥५०॥

यह देश तीनोंलोक हैं, स्वामी त्रिलोकी शिव लसे,
कण कण यहां शंकर बना, क्षण क्षण प्रकट हो कर बसे ।
सबका मनोरथ पूरते, करते प्रकाशभजन जहां,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥५१॥

पुरा दक्षशापाच्च यक्षमार्दितोऽसौ,

शिवाराधनं यत्र चन्द्रश्चकार ।

सुसौराष्ट्रभूमिं स्थितं सोमनाथं,

प्रसन्नाननं नौमि केदारनाथम् ॥५२॥

स्फुरज्ज्योतिषा लिङ्गभूतं बिभ्रान्तं,

सुतार्थाय कृष्णातटे श्रीगिरिस्थम् ।

स्थितं दम्पतिं मल्लिकामर्जुनं तं,

प्रतीक्षापरं नौमि केदारनाथम् ॥५३॥

स्वभक्तानुकम्पार्थमाविर्बभूव

स्फुरज्ज्योतिषा यः शिवो गोपपालः ।

महाकाललिङ्गं स्थितं चोज्जयिन्यां,

चिताभस्मकं नौमि केदारनाथम् ॥५४॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

जब दक्ष के ही शाप से यक्षमाग्रसित थे चन्द्रमा,
वे स्नान तप करने लगे, सौराष्ट्र में शिव परिक्रमा ।
आरोग्य पाया इस तरह से, सोमनाथ प्रसन्न हैं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५२॥

नाराज स्कन्द चले गये, हरगौरी व्याकुल ढूँढते,
कृष्णा नदी के श्रीगिरि में, थे प्रतीक्षा कर रहे ।
ये मल्लिकार्जुन देव ही, ज्योतिः यहां पर दे रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५३॥

नृप चन्द्रसेन मना रहे, उज्जैन में शिव पूजते,
था गोपबाल विलोक करके, ध्यान रुद्र थमा हुआ ।
तब विघ्नहारक सुफलदायक, महाकाल जगे यहां,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५४॥

सुखं नर्मदायास्तटे विन्ध्यध्यातं,
पुराणे च माम्धातृवासे वसानम् ।
महाब्रह्मनादं तदोङ्कारलिङ्गं,
स्फुरज्ज्योतिषं नौमि केदारनाथम् ॥ ५५ ॥

सदाचारनिष्ठैश्च शैवैः सुसेव्यं,
तथा डाकिनीशाकिनीप्रीतिमग्नम् ।
भयानां भयं शङ्करं भीमलिङ्गं,
स्वरूपे स्थितं नौमि केदारनाथम् ॥ ५६ ॥

तपोभिः प्रसाद्याऽऽशुतोषस्य लिङ्गं,
स्वलङ्कापुरीं रावणो नेतुमैच्छत् ।
धृतं मार्गमध्येऽचलं वैद्यनाथं,
स्फुरज्ज्योतिषं नौमि केदारनाथम् ॥ ५७ ॥

विन्ध्य ने उत्तुङ्ग बनने, ध्यान शंकर का किया,
तब नर्मदा तट के नगर, मान्धातृपुर में दिख रहा ।
शुभ नादप्रद ओंकार दीखे, लिंग ज्योति भा रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५५॥

सब शैवगण शुभ शान्ति से, सेवा करें जिसकी यहां,
वे डाकिनी अरु शाकिनी, प्रेतों को प्रीति दे रहे ।
निर्भय करें सब जीव को, हैं भीम शंकर रूप में,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५६॥

भारी तपस्या शीश देकर, प्रीत शंकर को किए,
रावण उठाये शंभु को, लङ्कापुरी को चल दिये ।
अब मार्ग में विश्रामधारी वैद्यनाथ अचल हुए,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५७॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

जगद्रावणं जानकीहारकं तं,
विजेतुं च रामेण संस्थापितं यत् ।
स्थितं सेतुबन्धे तु रामेश्वराख्यं,
जयश्रीप्रदं नौमि केदारनाथम् ॥ ५८ ॥

सदङ्गे वने दारुकाख्येऽतिरम्ये,
दुराचारिणां ध्वंसने यः प्रवृत्तः ।
जनान् पाति नागेश्वरं तं,
बलैश्वर्यदं नौमि केदारनाथम् ॥ ५९ ॥

चिदानन्दं भैरवाद्यैर्निषेव्यं,
सदैवाऽन्नपूर्णासमेतं सुवन्द्यम् ।
युगारंभवाराणसीविश्वनाथं
सुनिर्वाणदं नौमि केदारनाथम् ॥ ६० ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

संसार को जो था रुलाता, जानकीहारक कहें,
दुर्बुद्ध रावण जीतने को, राम के ईश्वर हुए ।
सेतुबन्ध समीप संस्थित रामनाथ महेश हैं,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५८॥

सदङ्ग दारुक वन विराजे, ध्वंस दुष्टों का करें,
वे पालते सज्जन रहे, भवमुक्तिभुक्ति दिया करे ।
नागेश लिंग भजे महा ऐश्वर्य से पूरित करे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥५९॥

चैतन्यदायक विश्वपालक, भैरवों से घिर रहें,
माताऽन्नपूर्णा संग में, जगवन्दिता वरदा रहे ।
वाराणसी के नाथ से, निर्वाण जग पाता रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६०॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महापातकं लीयते दर्शनेन,
प्रमाणं सभार्यो गतो गौतमोऽत्र ।
प्रभुं त्र्यम्बकेशं च गोदावरीस्थं,
स्वरूपे स्थितं नौमि केदारनाथम् ॥ ६१ ॥

महाक्लेशतो मुक्तिदातारमीशं,
महोदारभावेन चैलापुरस्थम् ।
वरेणाऽत्र यातं तु घुश्मेशलिङ्गं,
स्वरूपार्थदं नौमि केदारनाथम् ॥ ६२ ॥

वृषाङ्गं शुभाङ्गं शिवं चन्द्रमौलिं,
मृगव्याघ्रमुग्रं विरूपाक्षमीशम् ।
हरं ज्ञानगम्यं सुकीर्तिं सुलभ्यं,
स्वरूपेस्थितं नौमि केदारनाथम् ॥ ६३ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

दर्शन करें, पातक तुरत हैं दूर जिससे भागते,
गौतम अहिल्या की कथा, सुन्दर यहां पर मानते ।
गंगा बनी गोदावरी तट, ब्रह्मगिरि त्र्यम्बक रहें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६१॥

देवगिरि एलापुरी में भक्त घुश्मा थी हुई,
शंकर मनाया, पुत्र पाया, रुद्र रक्षक बन गये ।
अपकारि पर उपकार से घुश्मेश शंकर बस गये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६२॥

ये वृषभवाहन, चन्द्रमौली तीन नेत्र विराजते,
बाघाम्बरी भीषण लगे, तन नागभूषित साजते ।
अब ज्ञानपूर्वक ध्यान कर, शुभ रूप शंकर भासते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६३॥

पशूनांपतिं तत्र नेपालभूमौ,
मनोहारिणं कामदं नौमि देवम् ।
यतो वाग्मती जायते जीवलाढ्या,
स्वरूपे स्थितं नौमि केदारनाथम् ॥ ६४ ॥

तपःसार्थकं विल्वपत्रैः प्रसन्नं,
महापाठमन्त्रैश्च नागेशदेवम् ।
सुदूराज्जना यान्ति जागेश्वरस्थं,
वरैश्छादकं नौमि केदारनाथम् ॥ ६५ ॥

शिवो भक्तिभावेन सर्वत्र दीप्तः,
स्वयं संस्थितो भक्तवृन्दैः प्रतिष्ठः ।
कथायां रतोऽहं क्व पारं प्रयातः,
स सूतोऽवदन्नौमि केदारनाथम् ॥ ६६ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

ये पशुपति, नेपालभूमि काठमाण्डू दिव्य है,
मन कामना पूरित करे, दर्शन उन्ही का भव्य है।
वह वाग्मती का सलिल, सुन्दर गीत शिव का गारहा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६४॥

सार्थक तपस्या कर रहे, जो विल्वपत्र चढ़ा रहे,
वे रुद्रपाठी घोष से, नागेश का गुण गा रहे।
शिव को मनाने दूर से जागेश्वरेश्वर जा रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६५॥

लाखों जगह पर भक्त के भावों से शंकर रम गये,
उनके बड़े छोटे अनेकों, ये शिवालय हो गये।
सबकी कथा भारी मनोहर, सिद्धिदायी रुच गई,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६६॥

श्रुतं पूर्वकल्पे तदा धर्मकामो,
ददौ शम्भवे स्वां सुतां दक्षराजः ।
ययोः शाश्वती पूर्वजन्माच्च प्रीतिः,
सतीशं शिवं नौमि केदारनाथम् ॥६७॥

सतीशौ रमन्तौ क्व कालो गतोऽभूद्,
वने शङ्करो नौति रामं वियुक्तम् ।
सती मानुषी विस्मिता ज्ञानहीना,
स्थितां संशये नौमि केदारनाथम् ॥६८॥

शिवः प्राह मेऽभीष्टदेवोऽवतीर्णो,
यथाहं नराकारलीलानिमग्नः ।
ततश्छद्मसीतां नतं वीक्ष्य रामं,
विरागाश्रितं नौमि केदारनाथम् ॥६९॥

ऐसा सुना है धर्मपालन के लिए अपनी सुता,
व्याही सती शिव से गई, जब दक्षराज प्रवीण थे ।
शिवसती का प्रेम तो, कल्पान्त की गाथा रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥६७॥

उनका रमण का समय सारा, युग युगान्तर का गया,
वनवास में शिव ने प्रभु श्रीराम का वन्दन किया ।
अज्ञान मोहित मानुषी, विस्मित सती मन हो गया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥६८॥

शिव ने सती सन्देह हरने, कहा मेरे इष्ट हैं,
मेरे समान रमापति, मानुष चरित में श्रेष्ठ हैं ।
रामवन्दित छद्मसीता, लख विरागी शिव भये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥६९॥

विपन्नाऽथ दीना त्वनाहूयमाना,
 गता पितृयज्ञेऽपमानं स्वभर्तुः ।
 विलोक्याऽत्यजत्तत्र प्राणान् सती सा,
 ज्वलद्रोषिणं नौमि केदारनाथम् ॥ ७० ॥

कृतो बीरभद्रेण ध्वसः समन्तात्,
 स्तुतो विष्णुना प्राणदोऽभून् महेशः ।
 भृशार्तो गलेऽधारयन् मुण्डमालं,
 सतीस्मारकं नौमि केदारनाथम् ॥ ७१ ॥

अथाद्रिर्द्विधा स्थावरः शैलराज—
 स्तथा देवतात्मा सजीवावतारः ।
 स जामातृरूपे महेशं वृणोति,
 भवानीपतिं नौमि केदारनाथम् ॥ ७२ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भावी विपत्ति से सती दीना अनाहूता गई,
देखा पिता के यज्ञ में, अपमान भर्ता, ना सही ।
उसने तभी निज प्राण त्यागे, रोष शंकर का जगा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥७०॥

यह दक्षयज्ञ, विनष्ट जाकर वीरभद्र वहां किए,
हरि ने मनाया रुद्र को, सबको नये जीवन दिये ।
शिव के गले की मुण्डमाला में सती का सिर जुड़ा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥७१॥

ये शैलराज द्विधागति स्थावर तथा हैं देवता,
राजा बने, दामाद में शंकर, उमा के हैं पिता ।
इनकी कथा मोहक बड़ी, योगी भवानी को बरे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥७२॥

सती दक्षयज्ञे तदा त्यक्तदेहा,
जनिं मेनकायामवाप हिमाद्रेः ।
भवं योगनिष्ठं चतुष्कम्भमध्ये,
रमन्तं परं नौमि केदारनाथम् ॥ ७३ ॥

पितुः सा गृहे प्राक्तनैः कर्मभावैः,
प्रबुद्धा च कौमारभावं बभार ।
गृहे नारदात्सा शिवस्य गुणांस्तान्,
स्मरन्ती रता नौमि केदारनाथम् ॥ ७४ ॥

पुनर्निश्चयं पार्वती तत्र याता,
महेशो भवेन्मे प्रभुर्वा विवाहे ।
सपर्यासुखं योगिने साऽर्पयन्ती,
बभाषे यतिं नौमि केदारनाथम् ॥ ७५ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वधनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

त्यागी सती ने देह थी, उस दक्षयज्ञ विधान से,
पाया नया था जन्म उसने मेनका हिमवान से ।
योगी बने शिव रम रहे थे ध्यान में, गिरिगेह में,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७३॥

बढती रही प्राचीन कर्मों के उगे संस्कार से,
ज्ञानी बनी, युवती हुई थी, पार्वती सुकुमार से ।
नारद वचन से रम गई, शिवरूप मन भाने लगा,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७४॥

उसने किया निश्चय, मुझे शंकर पति ही चाहिए,
मुझको वरे, इस हेतु योगी की रुचि अपनाइये ।
पूजनविधि की वस्तुएं, नित भेंट वह देती रही,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७५॥

सुरैर्योजितं ध्यानभङ्गं विधातुं,
दहन्तं विलोक्याऽथ कामं च गौरी ।
सुसंस्मार पञ्चाक्षरं शैवमन्त्रं,
तया तोषितं नौमि केदारनाथम् । ॥७६॥

तपस्यारतां वीक्ष्य गौरीं कृशां तां,
बटुः सन् परीक्षां गिरीशश्चकार ।
प्रकाश्य स्वरूपं विवाहाय वाचं,
ददौ शङ्करं नौमि केदारनाथम् । ॥७७॥

विवाहे विचित्रा गता भूतसृष्टिः,
सुरोमाञ्चदा भीतिदाऽदृष्टपूर्वा ।
विधी रम्यतामाप दाम्पत्यलग्ने,
नवं दम्पतिं नौमि केदारनाथम् । ॥७८॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

सब देव भी थे चाहते, था कामदेव वहां गया,
योगी बड़ा क्रोधित हुआ, कन्दर्प भस्म समा गया ।
गौरी रही दृढ़ मन्त्र में, अब आशुतोष प्रसन्न थे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७६॥

तप साधती, गौरी बड़ी कृश हो गई, शिव देखकर,
बन ब्रह्मचारी, ली परीक्षा सम्वाद सुन्दर बोलकर ।
उत्तम दिखाया रूप अब, स्वीकार पाणिग्रहण था,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७७॥

आया विवाह, बरात में थी भूतसृष्टि बहुविधा,
रोमाञ्च, विस्मय, भीति का संगम न था देखा सुना ।
दाम्पत्यबेला पर मधुर रमणीयतां विधि हो गई,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥७८॥

वधूमङ्गलं लोकगार्हस्थ्यधर्मं,
श्रयन् जातपुत्रो महेशो रराज ।
शिशुः कार्तिकेयोऽग्निभूस्तारकारिः,
सिद्धोऽस्ति, तं नौमि केदारनाथम् । ॥७६॥

शिवाङ्गोद्भवं वत्सलं श्रीगणेशं,
गजास्यं चकार नटेशो सलीलम् ।
स्नुषे सिद्धिबुद्धी गृहे क्षेमलाभौ,
सुपौत्रौ स्थितौ नौमि केदारनाथम् । ॥७७॥

उमाकान्तगेहं समृद्धं सुविज्ञं,
गिरीन्द्रे स्थितं पार्वतीप्रीतिपूर्णम् ।
भवेत् सर्वगेहे तथा क्षेमयोगं,
मनोमोददं नौमि केदारनाथम् । ॥७८॥

पार्वती मङ्गलवधू, शिव का गृहस्थ संभालती,
 सन्तान से पैतृक जगत में, शंभु का यश पालती ।
 प्रिय कृत्तिका का, अग्नि का सुत, तारकासुर शत्रु था,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ७६ ॥

ये जो शिवात्मज प्रीतिपोषित श्रीगणेश विशेष थे,
 गजवदन इनको कर दिया, लीलानटेश महेश थे ।
 व्याही जिसे थी सिद्धि-बुद्धि, क्षेमयोग सुपौत्र हैं,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८० ॥

ऐसे सुखी, भरपूर ज्ञानी, सद्गृहस्थ महेश से,
 यह पार्वती का ललित, वत्सल घर सजा गिरिदेश में ।
 सब की गृहस्थी में सदाशिव, योगक्षेम दिया करें,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८१ ॥

कुबेरः कृतो यक्षराजो धनेशो,
 शिवेन तथा नारदो मोहमुक्तः ।
 स भस्मासुरो रावणोऽपि तदिथं,
 वरैस्तोषितौ, नौमि केदारनाथम् ॥ ८२ ॥

पुरीगुप्तकाशीस्थितं विश्वनाथं,
 स्तुवन् राज्यभोगं समृद्धं बुभोज ।
 हरिं युध्यमानोऽपि बाणासुरोऽसौ,
 गणोऽस्याऽभवन् नौमि केदारनाथम् ॥ ८३ ॥

शिवो दम्भपुत्रं नृपं शंखचूडं,
 गणैर्युध्यमानः ससैन्यं जघान ।
 परास्तोऽन्धकः पार्षदानां स्थितोऽभूद्,
 विचित्रास्पदं नौमि केदारनाथम् ॥ ८४ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

शिव ने कुबेर बना दिये थे यक्षराज, धनेश भी,
अज्ञान का बन्धन मिटा, नारद किए मुनिश्रेष्ठ ही ।
वर प्राप्त भस्मासुर किये, रावण भये लंकेश थे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥८२॥

अब गुप्तकाशी में रहे, शिव ध्यान बाणासुर किए,
उनकी हजार भुजा हुई, साम्राज्य सुख सारे लिए ।
जब युद्ध में हारे, हरि से, शिवगणों में हो गये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥८३॥

बहु शक्ति, भक्ति, राजभोगी, शंखचूड़ प्रसिद्ध था,
सेना सहित संहार पाया, रुद्र का वह युद्ध था ।
अपना तनय अन्धक महासुर, हारकर गण बन गया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥८४॥

पुराणां त्रयं सानुजं तारकाक्षं,
महास्त्रैर्जघान ररक्ष मयं सः ।
महायान्त्रिकं शिल्पशास्त्रेषु दक्षं,
सुविद्याव्रतं नौमि केदारनाथम् ॥ ८५ ॥

शिलादो महात्मा तपःसिद्धियुक्तः,
सुतं याचते जन्ममृत्योः परं तम् ।
गुणैस्तैः स नन्दीश्वरस्यावतारो,
गृहीत्वागतो नौमि केदारनाथम् ॥ ८६ ॥

सुसेवाप्रसन्नं विलम्बाच्च रुष्टं,
जगद्वेत्ति दुर्वाससं क्रोधरूपम् ।
शिवस्याऽऽनेयं सुतं रामभक्तं,
भियां भीतिदं नौमि केदारनाथम् ॥ ८७ ॥

ॐ नमः शिवाय
॥ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

दिव्य रथ आरूढ शिव ने अस्त्र पाशुपत लिया,
तीनों पुरों को ध्वंस करके, तारकाक्ष मिटा दिया ।
मय को शरण दी, विश्व में सब शिल्पशास्त्र बचा लिया,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८५ ॥

तप रुद्र का कर, सिद्ध योगी थे शिलाद बने हुए,
उसने अमर सुत रुद्र जैसा मांग उनसे वर लिया ।
शिव सत्यवाणी के भये, नन्दीश्वरी अवतार था,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८६ ॥

सेवा मिले बरदान देते, ये विलम्ब से रुष्ट हैं,
दुर्वाससा मुनि जगत में, अवतार शिव के पुष्ट हैं ।
हनुमान शंकर के तनय के रूप में पूजित हुये,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८७ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महाकालतारादिविद्यावतारा

दशाऽर्थप्रदा भोगमोक्षे शिवस्य ।

तथा सन्ति चैकादशा रुद्ररूपा,

दिवोरक्षका नौमि केदारनाथम् ॥ ८८ ॥

शिवान्नारदो सर्वसंगीतशास्त्रं,

सकोटेश्वरस्य गुहायां पपाठ ।

स रुद्रप्रयागे च विद्याधरेभ्यो,

ददौ नर्तनं नौमि केदारनाथम् ॥ ८९ ॥

नटानामधीशो स्वनृत्याऽवसाने,

नवं पञ्चवारञ्च ढक्कां ननाद ।

वृतं सिद्धविद्याधरैः शब्दशास्त्रं,

महाज्ञानदं नौमि केदारनाथम् ॥ ९० ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अवतार दसविद्या कहे, महाकाल तार सुनाम से,
हैं भोग वैभव मुक्तिदायी, रुद्र के ही नाम से ।
अवतार ग्यारह रुद्र के हैं, इन्द्र को बल दे रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८८ ॥

गंगा किनारे की गुफा, शिववास कोटेश्वर रहे,
नारद तपस्या रत हुये, संगीत शिव से पा गये ।
नृत्य विद्याधर लिये थे, रुद्रप्रयाग बसे हुए,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ८९ ॥

नटराज ने डमरु बजाया, नाच पूरा हो गया,
चौदह मिले थे बोल जो, सब बोधदायक हो गया ।
सनकादिसिद्ध महर्षि सब, निज शास्त्र उससे रच लिए,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥ ९० ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

मनो मे मदो मध्यमेशे शिवे स्यात्,
पुराणेषु नाभिस्थली माहिषस्य ।
वसानं च कालीमठे पार्श्वशृङ्गे,
नभोदीपकं नौमिकेदारनाथम् ॥ ६१ ॥

गिरौ शंकरस्य तृतीयं स्वरूपं,
स्थितं बाहुरूपं गिरौ तुङ्गनाथे ।
नगात्तात्र पातालगङ्गा प्रसूता,
तृतीयस्थलं नौमि केदारनाथम् ॥ ६२ ॥

मुखं माहिषं रुद्रनाथे प्रतिष्ठं,
चतुर्थस्वरूपं गणास्तं नमन्ति ।
शिवाराधकाः क्लान्तिहीनाः श्रयन्ते,
महोच्चैःस्थितं नौमि केदारनाथम् ॥ ६३ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

मन मदमहेश्वर रम गया, नाभिस्थली माहिष सजा;
ऊंचा बड़ा केदार का, यह दूसरा घर हो गया ।
गिरिपार्श्व में देवी रहे, जो स्थान कालीमठ हुआ,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६१॥

केदारनाथ तृतीय मन्दिर, तुङ्गनाथ महान है,
यह बाहुरूपी लिङ्ग का, देता रहा शुभ ज्ञान है ।
पातालगंगा बह रही, रमणीयता का स्थान है,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६२॥

जब रुद्रनाथ विलोकते, माहिषमुखी शिव दीखते,
केदार के गण हर्षपूर्वक, ज्ञान शिव से सीखते ।
केदार चौथा मानकर, शिवपूजने सब जा रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६३॥

महारण्यतुङ्गे स्थितं कल्पनाथं,
विकीर्णं जटाजूटरूपं सुछन्नम् ।
घनानां तुषाराभिषेकैः प्रसन्नं,
परं पञ्चमं नौमि केदारनाथम् ॥ ६४ ॥

समस्तैस्तपस्यारतैः शास्त्रदृष्ट्या,
पुरीग्राममध्ये गुहासु प्रतिष्ठः ।
जगत्यां स केदारनाथोऽनुकूलो,
हृदाह्लादकं नौमि केदारनाथम् ॥ ६५ ॥

शिवं मुण्डनेशं तथा विन्सरेशं,
स्थितं नीलकण्ठं च विल्वेश्वरं तम् ।
रुचा ताडकेशं च कालेश्वराख्यं,
रुचेश्चित्रितं नौमि केदारनाथम् ॥ ६६ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ऊँचे बड़े हिमशैल पर हैं, कल्पनाथ रमे हुए,
उनकी जटायें ज्यो घने हैं, मेघ गिरि छाये हुए ।
तुहिनकण अभिषिक्त हैं, केदार पञ्चम रूप में,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६४॥

तप में लगे सब साधकों ने, शास्त्रविधि पालन किया,
घर गांव नगरों या गुफा में, स्थान शंकर को दिया ।
शंकर रमें इन लिंग में, अनुकूल फल हैं दे रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६५॥

ये हैं कहीं पर मुण्डनेश्वर, ताडकेश्वर नाम से,
विन्सर कहे या विल्वकेश्वर, नीलकण्ठ समान हैं ।
कालेश्वरी है लिंग, भैरवनाथ तेरा रूप है,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६६॥

शिवो ग्रामरक्षाकरो भैरवाख्यो,
विपत्तौ जनान् बोधवाणीं प्रदाता ।
सदाऽऽप्तैः कथाभिर्गृहे गीयमानो,
विनष्टापदं नौमि केदारनाथम् ॥ ६७ ॥

प्रयान्तु क्षयं भीतयः कर्षकाणां,
तथा सस्यपूर्णानि क्षेत्राणि सन्तु ।
निरीतिकृतं पुष्टिदं क्षेत्रपालं,
कृषेः रक्षकं नौमि केदारनाथम् ॥ ६८ ॥

तपो मन्त्रपाठैर्जपैर्ध्यानयो गै —
गुरोः सेवया नित्यकर्मस्थितानाम् ।
स्वनिष्ठाव्रतैः सिद्धनाथादिकानां,
गिरां सिद्धिदं नौमि केदारनाथम् ॥ ६९ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

शिव ग्रामरक्षक देवता, भैरव बने, रक्षा करें,
आती विपत्ति देखकर, चेतावनी बोला करें ।
आगाह भैरव ने किया था, ग्रामजन पहले कहें,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६७॥

पायें सभी शिव की कृपा, निर्भय कृषक खेती करें,
खेती रहे भरपूर, लहलाते अनाज भरा रहे ।
वे क्षेत्रपाल बचा रहे, शिव ईति भीति निवारते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६८॥

अपनी तपस्या, मन्त्रपाठों, जाप ध्यानों में जपें,
सत्कर्म में तल्लीन, शिवगुरु भक्ति भावों में रमें ।
सब सिद्ध, नाथ, व्रती, तपस्वी, सत्यवाणी बोलते,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ ॥६९॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

स्वमार्गं गुणैः संसृतेर्विश्वरूपं,
 विरच्य स्वयं क्रीडते शम्भुरीशः ।
 समुद्धारकं पालकं तं कृपालुं,
 प्रसन्नाननं नौमि केदारनाथम् ॥ १०० ॥

श्रुतीनां स्मृतीनां पुराणागमानां,
 स्थिते शब्दसंघे नवीना स्तुतिः सा ।
 पुनातीव पीत्वाऽमृतं गाङ्गनीरं,
 कृपास्रोतसं नौमि केदारनाथम् ॥ १०१ ॥

मधुस्राविणी ह्लादिनी चित्तवृत्तेः,
 श्रुतौ स्थीयते गीतिका शङ्करस्य ।
 मदीयां गिरं स्तोत्रवाणीं निशम्य,
 प्रसादंगतं नौमि केदारनाथम् ॥ १०२ ॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अपने गुणों से विविध जन के रूप में शिव आ रहे,
रचना नई करके स्वयं, क्रीड़ा नई दिखला रहे ।
पालन सृजन उद्धार में, हंसमुख सभी को भा रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥१००॥

सब वेद शास्त्र पुराण हैं, शिवगीत वाणी गा रहे,
मन में बसी नव भक्ति तेरी, ज्ञान देती भा रही ।
करता पवित्र सुधा सलिल, गंगा कृपा करती रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥१०१॥

माधुर्य जिसमें बह रहा, आह्लाद मन में भर रहा,
वह गान शंकर के गुणों का, कान में रस दे रहा ।
ऐसी सरस सुरभारती के बचन से खुश लग रहे,
केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । ॥१०२॥

भये यागदीक्षातपस्तीर्थायात्रा,
प्रसङ्गे सुपाठ्यं च केदारगीतम् ।
भयाद् भीषणात् पाति मृत्युञ्जयोऽसौ,
ब्रुवन्तं नरं नौमि केदारनाथम् ॥१०३॥

गता कामकोपाऽर्तिलोभादिसंघा—
स्त्वदीये प्रकाशे प्रदीप्तं च चित्तम् ।
विभाति स्वरूपं गुणैः सुप्रकृष्टं,
महामङ्गलं नौमि केदारनाथम् ॥१०४॥

मुखे माधुरीमेति गीर्वाणवाणी,
गृहे भाति कौबेरसम्पत् सुतुष्टे ।
प्रयातं जराजन्मदारिद्र्यदुःखं,
सुखं गीयते नौमि केदारनाथम् ॥१०५॥

ॐ नमः शिवाय
 ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

जब यज्ञ दीक्षा तप करें या तीर्थयात्रा जा बढे,
 भय लग रहा हो, गीत तब, केदार का रुचि से पढ़ें ।
 सबको करे निर्भय, सुखी, जब नाम मृत्युञ्जय जपें,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०३ ॥

सब काम क्रोध मिटा दिये, दुःख लोभ दुर्गुण भागते,
 ज्ञान का फैला उजाला, चैतन्य पाया जागते ।
 मङ्गलविधायक, भव्य, व्यापक, रूप मन में बस गया,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०४ ॥

मुख में मधुरता घोलती, यह देववाणी बोलते,
 केदारनाथ प्रसन्नता से द्वार धन का खोलते ।
 भागता जाता बुढापा, दीनता, सुख साजता,
 केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०५ ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

प्रदोषे पठन् स्तोत्रमेतत् सश्रद्धं,
शिवं चित्तवृत्तौ स्थितं संस्मरन्निह ।
समुद्धारको वाचि यो वर्तमानः,
सहाय्यप्रदं नौमि केदारनाथम् ॥ १०६ ॥

यथा स्यादपर्णाप्रियः स्निग्धदृष्टिः,
सपर्यानुकम्पां नितान्तं तनोतु ।
स्तुतिः संप्रयुक्ता शिवा श्रीधरीयं,
तया प्रीणितं नौमि केदारनाथम् ॥ १०७ ॥

तवैवास्मि शम्भो गिरा सा त्वदीया,
तरङ्गं समुद्रे तथा मामवेहि ।
स्तुतिर्वाङ्मयी भक्तिपुष्पोपहारा,
धृता पादयोर्नौमि केदारनाथम् ॥ १०८ ॥

॥ इति श्रीश्रीधरप्रसादबलूनीविरचितं श्रीकेदारनाथस्तोत्रपाठसम्पन्नम् ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टितर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

। न्ध्यासमय, श्रद्धा सहित, इस स्तोत्र को जो पढ़ रहे, शिव में रमाये चित्त को, उनका स्मरण हैं कर रहे । वाणी उन्हीं की सफल होती, देव करते मदद हैं, केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०६ ॥

प्रेम से अवलोकते उनको अपर्णेश्वर रहें, पूजा भरा सुख भोग करते दया सब पर कर रहे । यह श्रीधरी है प्रार्थना, शिव को प्रसन्न किया करे, केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०७ ॥

मैं आपका हूँ, भारती यह आपका गुण गारही, उठती लहर है जलधि में, इस जीव को माना करें । यह भक्ति पुष्पों से भरी, वाणी चरण में नत रहें, केदारनाथ महेश की नित वन्दना करता रहूँ । १०८ ॥

॥ इति श्री श्रीधरप्रसादबलूनीविरचितं श्रीकेदारनाथस्तोत्रपाठसम्पन्नम् ॥

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अष्टोत्तरकेदारनाथनामसंकीर्तनम्

श्रूयतां पूजने श्रेष्ठं येन तुष्टो महेश्वरः ।

अष्टोत्तरशतं नाम शैवं यानि पठाम्यहम् ॥ १ ॥

“शिवो हरो मृदो रुद्रः, शर्वः शम्भुर्महेश्वरः ।

चन्द्रापीडश्चन्द्रमौली कपाली नीललोहितः ॥ २ ॥

अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिः देवदेवस्त्रिलोचनः ।

वामदेवो महादेवो, विरुपाक्षश्च धूर्जटिः ॥ ३ ॥

ईशः पिनाकी खट्वाङ्गी, वृषाङ्को वृषवाहनः ।

कालकालः कृतिवासाः, दुर्वासाः पुरशासनः ॥ ४ ॥

दिव्यायुधः स्कन्दगुरुः गिरिशो गिरिजाधवः ।

विशालाक्षो मृगव्याधः, श्रीकण्ठो भगनेत्रभिदः ॥ ५ ॥

पिनाकपार्णिभूदेवः, कपर्दी कामशासनः ।

भस्मप्रियो भस्मशायी भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ ६ ॥

अध्यात्मयोग-निलयः, सिद्ध-वृन्दार-वन्दितः ।

व्याघ्रचर्माम्बरो व्याली, ब्रह्मवेदनिधिर्निधिः ॥ ७ ॥

वीतरागो विनीतात्मा विश्वकर्मविशारदः ।

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो परमात्मा जगद्गुरुः ॥ ८ ॥

अद्रिरद्र्यालयः सिद्धः, लोकनाथो दुराधरः ॥

नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः शिपिविष्टः शिवालयः ॥ ९ ॥

कैलाशाधिपतिः कान्तः व्यालकल्पः कलाधरः ।

अघोरोऽथसमाम्नायः स्वक्षः परपुरञ्जयः ॥ १० ॥

पिङ्गलाक्षः पार्वतीश-स्तीर्थदेवः शिवालयः ।

देवासुर-महामित्रो देवासुरनमस्कृतः ॥ ११ ॥

नन्दी नन्दीश्वरोऽनन्तो नरसिंह—निपातनः ।
 अन्धकारिर्मखद्वेषी, त्र्यम्बको नागभूषणः ॥१२॥
 दुर्जयो खण्डपरशुः सकलो निष्कलोऽनघः ।
 केदार शिखरावासी, भूतपालः परेतराट् ॥१३॥
 भूशयो निष्प्रपञ्चात्मा, सिद्धिदो नीललोहितः ।
 शिखण्डी कवची शूली कङ्कणीकृतवासुकी ॥१४॥
 अनुत्तमो दुराधर्षो नरनारायणाप्रियः ॥
 अष्टोत्तरशतं नाम शंकरस्य पठन्ति ये ॥१५॥
 विल्वपत्रैस्तथा पुष्पैः पद्मजैः कर्णिकारजैः ।
 पूजयन्ति गन्धदीपैः रुद्रलोके वसन्ति ते ॥१६॥
 अष्टोत्तरशतं नाम केदारनाथ सम्मतम् ।
 महत्पुण्यप्रदं ख्यातं नारायणप्रियं स्तुतम् ॥१७॥
 कण्ठस्थितं मुदा वाच्यं, तत्त्वचिन्तनपूर्वकम् ।
 प्रातःकालेऽथवा सायं पूजास्थाने तथा पथि ॥१८॥
 शिवालये गृहे वाऽपि, संस्मरेद् भक्तिपूर्वकम् ।
 रुद्राभिषेके सम्प्राप्ते शिवलिङ्गोपरि क्रमात् ॥१९॥
 'नमः शिवाय' मन्त्रेण, विल्वपत्रं समर्पयेत् ।
 पद्मपुष्पं, कर्णिकारं, यथाकाल—समुद्भवम् ॥२०॥
 शिवाप्रियाणि चान्यानि, स्वल्पं वा नाममात्रकम् ।
 तुष्टस्तेन सदा शम्भुः लक्ष्मीं यच्छति सुस्थिराम् ॥२१॥
 पुत्रपौत्रसुखं गेहे, त्वपमृत्युनिवारणम् ।
 दीक्षादाने तपस्तीर्थे सिद्धिमष्टोत्तरं जपेत् ॥२२॥
 स्वधर्मवर्तिनां ध्येयं कुमार्गात्त्राणदायकम् ।
 आरोग्यैश्वर्यप्राप्त्यर्थं शिवमष्टोत्तरं जपेत् ॥२३॥

इति श्रीकेदारनाथस्तोत्रवर्णने श्रीधरप्रसादबलूनीकृतशिवाष्टोत्तरनामसंकीर्तनसमाप्तम्

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिबर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥



श्रीकेदारनाथ शंकर जी की संक्षिप्तपूजनविधि:

प्रातः काल नित्यक्रिया करके स्नान के उपरान्त शुद्ध वस्त्र पहन कर, आसन पर बैठ कर, पूजा स्थान पर सामग्री रखकर दीप जला कर गणेश स्मरणपूर्वक, केदारनाथ (शिव) का ध्यान करें।

ध्यायेत् केदारनाथं हिमगिरिशिखरे ज्योतिषा लिङ्गरूपं,

भान्तं नारायणस्य व्रतजपनियमैः संस्थितं नित्यबोधम्।

वीणावेणुमृदङ्गैः स्तुतिनिनदभरैर् नृत्यगीतैः प्रसन्नं,

विघ्नानां कालदण्डं प्रकटितविभवं शूलपाणिं महेशम्॥

केदारनाथ! देवेश! गङ्गाधर! महेश्वर!।

मम ध्याने समाविष्टः, पूजां स्वीकुरु शङ्कर!॥

ध्यानपुष्पं (ध्यानपुष्प) समर्पयामि।

इसके बाद क्रमशः मन्त्रों का उच्चारण करते हुए या उनके नीचे बताई हुई विधि के अनुसार पूजा सामग्री शंकर जी पर चढ़ाते जायें।

त्रिपुरान्तरकं देवं चूडाचन्द्रमहाद्युतिम्।

गजचर्मपराधीनं शिवमावाहयाम्यहम्॥

अक्षतान् (आवाहनम्) समर्पयामि।

विश्वेश्वर! महादेव! महेशान् परात्पर!।

मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पाणि (आसनार्थे) समर्पयामि।

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंमुतम्।

पाद-प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

जलम् (पाद्यम्) समर्पयामि।

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

नमस्ते देवदेवेश! नमस्ते करुणाम्बुधे! ।

करुणां कुरु मे देव! गृहाणाऽर्घ्यं नमोस्तु ते ॥

जलम् (अर्घ्यम्) समर्पयामि ।

सर्वतीर्थ-समायुक्तं, सुगन्धि निर्मलं जलम् ।

आचम्यतां मया दत्तं, गृहाण परमेश्वर! ॥

जलम् (आचमनीयम्) समर्पयामि ।

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदा-जलैः ।

स्नापितोऽसि मया देव! ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

जलम् (स्नानीयम्) समर्पयामि ।

पञ्चामृतं मयानीतं, पयो-दधि-घृतं मधु ।

शर्करा च समायुक्तं, स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

दुग्धम् (पञ्चामृतम्) समर्पयामि ।

गङ्गा-गोदावरी-रेवा-पयोष्णी-यमुना तथा ।

सरस्वती तीर्थजातं, स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

जलधारं (शुद्धोदकम्) समर्पयामि ।

शीत-वातोष्ण-सन्त्राणं, लज्जाया रक्षणं परम् ।

देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।

रक्तसूत्रम् (वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, उपवस्त्रं च) समर्पयामि ।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं, गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

तिलकम् (गन्धं, चन्दनम् च) समर्पयामि ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।

मया निवेदिता भक्त्या, गृहाण परमेश्वर! ॥

अक्षतान् (चावल) समर्पयामि ।

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

मात्स्यादीनि सुगन्धीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो ।

मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि, गृहाण परमेश्वर! ॥

पुष्पमालाम् (फूल व माला) समर्पयामि ।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।

त्रिजन्म-पाप-संहारं, विल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥

विल्वपत्रम् (वेलपत्र) समर्पयामि ।

दूर्वाऽङ्कुरान् सुहरितान्, अमृतान् मङ्गलप्रदान् ।

आनीतान् तव पूजार्थं, गृहाण परमेश्वर! ॥

दूर्वाकुरान् (दूब) समर्पयामि ।

(अब जो भी उपलब्ध हो शमी, तुलसी, आभूषण, हल्दी, गुलाल, सिन्दूर, इत्र आदि भी नाम लेकर क्रम से चढ़ाएं। इसके बाद १०८ नाम से बेल पत्र, कमल पुष्प भी मिलने पर शिवलिङ्ग के ऊपर चढ़ाएं।)

वनस्पति-रसोद्भूतो, गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।

आग्नेयः सर्वदेवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

धूपम् (अगरबत्ती व धूप) समर्पयामि ।

साज्यं च वर्तिना-युक्तं, बह्निना योजितं मया ।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्य-तिमिरापह! ॥

दीपम् (दीप बत्ती) समर्पयामि ।

शंकरा-खण्ड-खाद्यानि, दधि-क्षीर-घृतानि च ।

आहारो भक्ष्य-भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

प्रसादम् (मिष्ठान्न, नैवेद्य आदि) समर्पयामि ।

इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव ।

प्रीत्या गृहाण देवेश! प्रसीद परमेश्वर! ॥

फलानि (विविध प्रकार के फल) समर्पयामि ।

ॐ श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् ॐ

॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

(अब पान, लौंग, इलायची इत्यादि उपलब्ध हों तो भगवान को चढ़ायें। सम्भव हो तो गंधोदक, विजया, भांग, धतूरा, विल्वपत्र, तुलसी दल भी शंकर जी पर चढ़ाये जाते हैं)

दक्षिणा स्वर्ण-सहिता, यथाशक्ति समर्पिता ।

अनन्त-फलदामेनां, गृहाण परमेश्वर ! ॥

दक्षिणाम् (रूपये, पैसे, धन) समर्पयामि ।

(पूजन के पश्चात् कपूर आदि से इच्छानुसार शंकर भगवान की आरती करनी चाहिए। तत्पश्चात् हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें।)

निराकारान्नराकार-रूपाय परमात्मने ।

नमः केदारनाथाय, पार्वतीपतये नमः ॥

कर्पूरगौरं करुणाऽवतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसन्तं हृदयाऽरविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,

श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,

जय जय करुणाब्धेः श्रीमहादेव! शम्भो ! ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचरा प्राणाः शरीरं गृहं,

पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः ।

सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरः,

यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं, शम्भो तवाराधनम् ॥

(इसके बाद नमस्कार, जयकार, हर-हर शंकर महादेव, बोलते हुए, कीर्तन, भजन, अभिषेक, विसर्जन, प्रसाद वितरण करना चाहिए।)

॥ इति श्री श्रीधरप्रसादबलूनीविरचिते केदारनाथस्तोत्रे संक्षिप्तकेदारनाथपूजनविधिः सम्पूर्णा ॥



शंकर भगवान की आरती

ओऽम् जय शिव ओंकारा, स्वामी जय जय शिव ओंकारा ।
 ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ओऽम् हर-हर हरमहादेव ॥
 एकानन चतुरानन पंचानन राजै, स्वामी पंचानन राजै ।
 हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै, ओऽम् हर-हर० ॥
 दो भुज चारू चतुर्भुज दसभुज अति सोहै, स्वामी दसभुज० ।
 तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै, ओऽम् हर-हर० ॥
 अक्षमाला वनमाला रूण्डमालाधारी, स्वामी रूण्डमाला० ।
 त्रिपुरारी कंसारी करमालाधारी, ओऽम् हर-हर० ॥
 श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर० ।
 सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे, ओऽम् हर-हर० ॥
 कर मध्ये सुकमण्डलु चक्रशूलधर्ता, स्वामी चक्रशूलधर्ता० ।
 जगहर्ता जगकर्ता जगपालनकर्ता, ओऽम् हर-हर० ॥
 ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी ।
 प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओऽम् हर-हर० ॥
 त्रिगुणस्वामि की आरति जो कोई नर गावै, स्वामी० ।
 कहत 'शिवानन्द' स्वामी मनवांछित फल पावै, ओऽम् ॥

श्री श्री गुरु महाराज जी की आरती

नमो सदगुरुं सच्चिदानन्द रूपम् ।
 नमो सदगुरुं ज्ञानदाता अनूपम् ॥
 नमो सदगुरुं सत् सारूपं विकासम् ।
 नमो सदगुरुं भानुवत् सुप्रकाशम् ॥
 नमो सदगुरुं बुद्धि - विद्या - प्रदाता ।
 नमो सदगुरुं सृष्टिकर्ता विधाता ॥
 नमो सदगुरुं वेद ब्रह्मा - स्वरूपं ।
 नमो सदगुरुं भूपभूपानुभूपम् ॥
 नमो सदगुरुं काल कालं करालम् ।
 नमो सदगुरुं भक्त - मानसमरालम् ॥
 नमो सदगुरुं दास पापप्रहारी ।
 नमो सदगुरुं निर्गुणं निर्विकारी ॥

दोहा - - कृपा उदधि गुरुदेव के लहर वचन अनमोल ।
 भक्तियोग के भेद को, दियो पलक में खोल ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव
 त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव



अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी केशवचन्द पुरी जी महा . ।

धर्म की जय हो
अधर्म का नाश हो

प्राणियों में सद्भावना हो
विश्व का कल्याण हो
हर हर महादेव

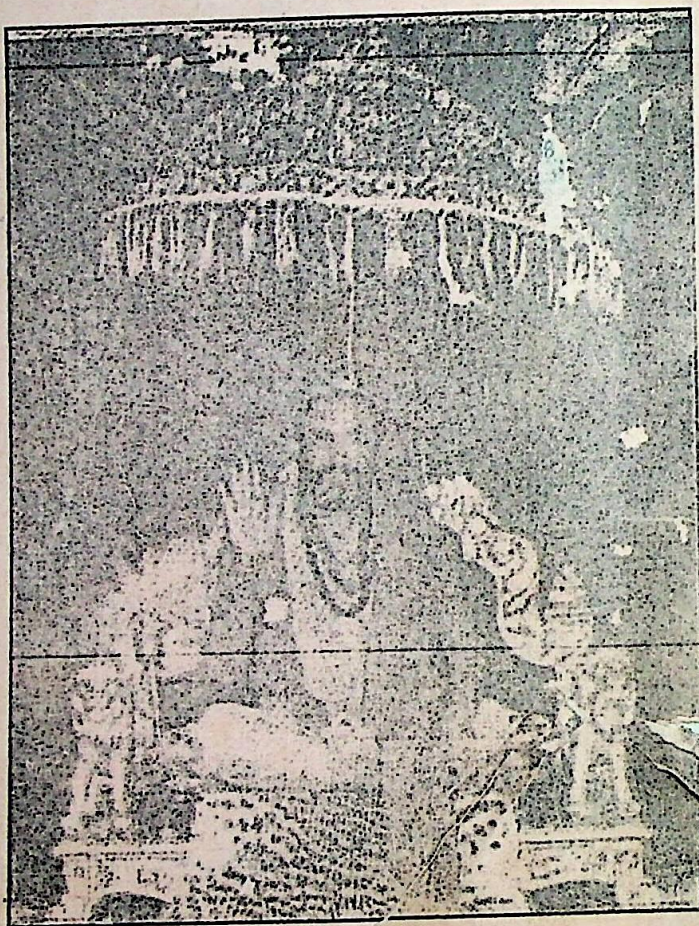
गोहत्या बन्द हो
गो माता की जय हो



धर्मसम्राट्



जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठधीश्वर अनन्तश्री स्वामी माधवाश्रमजी महाराज
(ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम हिमालय)
(अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ)



प्रकाशक :

शिव मन्दिर समिति अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम
श्रीपरम धाम, एम-4, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052
दूरभाष : 23642424